वन्दे मातरम्

स्तुति संग्रह

संकलन एवं सम्पादन

रमेश 'कँवल'

श्वेतवर्णा प्रकाशन

नई दिल्ली

Published by Shwetwarna Prakashan in Hindi in Hardcover as *Vande Mataram* (First Edition) Authored by *Ramesh 'Kanwal'* in the year 2026.

Shwetwarna Prakashan
212 A, Express View Apartment
Super MIG, Sector 93, Noida-201304, INDIA
Mobile: +91 8447540078
Email: shwetwarna@gmail.com
Website: www.shwetwarna.com

Copyright © *Ramesh 'Kanwal'*

ISBN: 978-81-976575-*-*

Views and opinions expressed in this work are author's own and the facts are reported by the author and the publisher is in no way liable for the same.

All rights reserved.

Book Design by *Sharda Suman*

No part of this book may be reproduced, or stored in a retrieval system, or transmitted in any form or by any means electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without express written permission of the author.

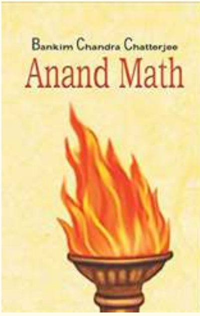

सिक्का जारी करते हुए प्रधान मंत्री जी

डाक टिकट जारी करते हुए प्रधान मंत्री जी

वन्दे मातरम् स्तुति संग्रह के ग़ज़लकार

अनिल कुमार सिंह

अमित 'अहद'

अरुण कुमार आर्य

अविनाश अमन

अशोक 'अंजुम'

आनन्द पांडेय 'तन्हा'

आराधना प्रसाद

इकराम हुसैन 'शाद'

कविता विकास

कालजयी घनश्याम

कुमार पंकजेश

चाँद मुंगेरी

ज़ाहिद अबरोल

ज्योति मिश्रा

ज्वाला सांध्यपुष्प

डॉ. अर्चना गुप्ता

डॉ. आनन्द किशोर

ऋषिपाल धीमान 'ऋषि'

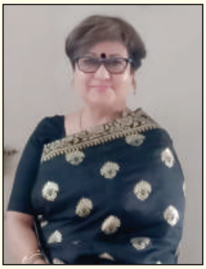

डॉ. कनक लता तिवारी

डॉ. कृष्णकुमार 'नाज़'

डॉ. नरेन्द्र कुमार सिंह 'त्यागी'

डॉ. पुष्प कुमार राय

डॉ. पूनम सिन्हा 'श्रेयसी'

डॉ. ब्रह्मजीत गौतम

डॉ. मेहता नगेन्द्र सिंह डॉ. विनोद प्रकाश गुप्ता 'शलभ' डॉ. शिवओम अम्बर

डॉ. संगीता नाथ 'संगीत' डॉ. सीमा विजयवर्गीय डॉ. सुनीता सिंह 'सुधा'

दिनेश सिंदल दिलीप समदर्शी नवीन सी. चतुर्वेदी

निरुपमा चतुर्वेदी पंकज त्यागी 'असीम' पूर्णिमा सुमन

प्यासा अंजुम

प्रीति सुमन

डॉ. (महाकवि) प्रेमानंद सरस्वती

डॉ. (प्रो.) सुधा सिन्हा

बाबा बैद्यनाथ झा

भूपेन्द्र सिंह 'होश'

महेश कुमार कुलदीप

मिथिलेश 'आदित्य'

मीना भट्ट सिद्धार्थ

मुकेश सिंहानिया

रमा प्रवीर वर्मा

रमेश 'कँवल'

रवि खण्डेलवाल

राजकान्ता राज

रीना धीमान 'स्वर्ण'

रेखा भारती मिश्रा

संजीव प्रभाकर

सत्यभामा सिंह 'ज़िया'

सुरेंद्र कुमार सैनी

सुभाष मित्तल सत्यम्

हिमकर श्याम

विजय कुमार स्वर्णकार

अनुक्रम

- वन्दे मातरम् : भारतीय संस्कार का मंत्र-विजय कुमार स्वर्णकार 13
- सुखदाम् वरदाम् मातरम्-ज़ाहिद अबरोल 17
- वन्दे मातरम् की पृष्ठभूमि-रमेश 'कँवल' 22
- वन्दे मातरम् स्तुति संग्रह की परिकल्पना-रमेश 'कँवल' 27
- राष्ट्रगीत वन्दे मातरम् का मूल राग में भावानुवाद 31
- वन्दे मातरम् का उर्दू काव्यानुवाद 33
- वन्दे मातरम् का हिन्दी अनुवाद-अर्थ 36
- अंग्रेज़ी अनुवाद 40

1. अनिल कुमार सिंह 43
2. अमित 'अहद' 45
3. अरुण कुमार आर्य 48
4. अविनाश अमन 50
5. अशोक 'अंजुम' 52
6. आनन्द पांडेय 'तन्हा' 54
7. आराधना प्रसाद 56
8. इकराम हुसैन 'शाद' 57
9. ऋषिपाल धीमान 'ऋषि' 60
10. कविता विकास 62
11. कालजयी घनश्याम 64
12. कुमार पंकजेश 65
13. चाँद मुंगेरी 67

14. ज़ाहिद अबरोल 69
15. ज्योति मिश्रा 70
16. ज्वाला सांध्यपुष्प 72
17. डॉ. अर्चना गुप्ता 74
18. डॉ. आनन्द किशोर 76
19. डॉ. कनक लता तिवारी 78
20. डॉ. कृष्णकुमार ‘नाज़’ 79
21. डॉ. नरेन्द्र कुमार सिंह ‘त्यागी’ 80
22. डॉ. पुष्प कुमार राय 81
23. डॉ. पूनम सिन्हा ‘श्रेयसी’ 82
24. डॉ. (महाकवि) प्रेमानंद सरस्वती 84
25. डॉ. ब्रह्मजीत गौतम 86
26. डॉ. मेहता नगेन्द्र सिंह 88
27. डॉ. विनोद प्रकाश गुप्ता ‘शलभ’ 89
28. डॉ. शिवओम अम्बर 91
29. डॉ. संगीता नाथ ‘संगीत’ 92
30. डॉ. सीमा विजयवर्गीय 93
31. डॉ. (प्रो.) सुधा सिन्हा 94
32. डॉ. सुनीता सिंह ‘सुधा’ 95
33. दिनेश सिंदल 96
34. दिलीप समदर्शी 98
35. नवीन सी. चतुर्वेदी 100
36. निरुपमा चतुर्वेदी 102

37. पंकज त्यागी 'असीम' 104

38. पूर्णिमा सुमन 105

39. प्यासा अंजुम 107

40. प्रीति सुमन 111

41. बाबा बैद्यनाथ झा 112

42. भूपेन्द्र सिंह 'होश' 113

43. महेश कुमार कुलदीप 115

44. मिथिलेश 'आदित्य' 117

45. मीना भट्ट सिद्धार्थ 118

46. मुकेश सिंहानिया 119

47. रमा प्रवीर वर्मा 121

48. रमेश 'कँवल' 123

49. रवि खण्डेलवाल 125

50. राजकान्ता राज 127

51. रीना धीमान 'स्वर्ण' 129

52. रेखा भारती मिश्रा 131

53. संजीव प्रभाकर 133

54. सत्यभामा सिंह 'ज़िया' 135

55. सुरेंद्र कुमार सैनी 136

56. सुभाष मित्तल सत्यम् 138

57. हिमकर श्याम 141

❁ विभिन्न राज्यों के कवि/कवयित्रियों के नाम 143

❁ ग़ज़लकारों के नाम, शहर, मोबाइल नंबर और उनकी जन्मतिथियाँ 146

वन्दे मातरम् : भारतीय संस्कार का मंत्र-
विजय कुमार स्वर्णकार

कुछ वाक्यांश कभी कभी सदियों तक जन मानस का हिस्सा बनकर पूरे राष्ट्र को प्रेरित करते रहते हैं। "वन्दे मातरम्" ऐसा ही उद्घोष है जो प्रत्येक भारतीय के रोम रोम को स्पंदित करता आया है। श्रद्धा और बलिदान दोनों भावनाएं इस एक ही उद्घोष से संचालित होती हैं। इसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से हम सभी परिचित हैं। वर्तमान में इसकी प्रासंगिकता क्या है, यही इस ग़ज़ल संग्रह का सार तत्त्व है। 150 से अधिक वर्षों के उपरांत भी वन्दे मातरम् हमें रोमांचित क्यों करता है? भारतीय दर्शन और चेतना को मूल में रखकर देखिए उत्तर स्पष्ट हो जाएगा।

मर्यादा पुरुषोत्तम तपस्वी राम चंद्र द्वारा लंका विजय के पश्चात दिया गया संदेश "जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी" उसी भारतीय संस्कार के कारण संभव था जिसे भारत की पवित्र और महान भूमि पर सदियों से अनेक ऋषि और मनीषी पोषित कर रहे थे।" वन्दे मातरम्" का सामान्य अर्थ भले ही मां की वंदना है परंतु यह अन्य स्तर पर मातृभूमि की वंदना से जुड़ा है। यह जादू बंकिम बाबू के गीत के कारण हुआ था। यहां माँ और मातृभूमि अलग अलग नहीं हैं, वे एक प्रतीत होती हैं। "वन्दे मातरम्" ने भारत की स्वाधीनता के संघर्ष में अपना अद्वितीय योगदान तो दिया ही है, बाद के समय में भी यह उमंग, उल्लास और साहस का पर्याय बना रहा है। यह हमें मां और मातृभूमि के साथ साथ अपनी जड़ों से जोड़ता है। यह कोई धार्मिक वाक्यांश नहीं है यह हमारे संस्कार का मंत्र है। यह त्रासद है कि बहुत से लोग यह समझते हैं कि जिस वन्दे मातरम् ने राष्ट्र को पुनर्जीवित किया था उसे पुनर्जीवित करने का कारण वर्तमान की छिछली राजनीति है। "वन्दे मातरम्" तो अमर है और जब तक भारतीयता शेष रहेगी, यह भी रहेगा।

इस संग्रह के साझेदार कवियों ने ‘‘वन्दे मातरम्’’ को समांत / रदीफ़ के स्थान पर रखते हुए अनेक रचनाएं प्रस्तुत की हैं। यह अद्भुत है। सृजनशीलता का यह सहगान एक विरल अनुभूति से परिचित कराता है। सभी रचनाकार और इस संग्रह के संकलन कर्ता और संपादक श्री रमेश ‘कँवल’ जी बधाई के पात्र हैं।

सामान्यतः होता यह है कि दिये गए विषय पर रचने पर कविता का स्तर उतना अच्छा नहीं रहता जितना स्वयं प्रेरित विषयों पर रची गई कविताओं का।इस दृष्टिकोण से यह संग्रह सफल है। अधिकांश रचनाएं स्तरीय हैं और पाठक को आकर्षित करती हैं।पूरा संग्रह पढ़ने पर यह विचार जन्म लेता है कि ‘‘वन्दे मातरम् ‘‘ धन्य है, इस पर जितना लिखा जाए वह कम है। प्रत्येक कवि ने कुछ न कुछ अलग खोजा और लिपिबद्ध किया है। कवियों ने ‘‘वन्दे मातरम्’’ को अलग अलग कोण से देखा और अलग अलग भावना से महसूस किया है। इससे विभिन्न कवियों की रचना प्रक्रिया समझने में भी मदद मिलती है। कुछ शे’र देखिए

धन्य है बंकिम चटर्जी, धन्य है आनंदमठ
मिल गया जिनसे हमें वरदान वन्दे मातरम्

कृष्ण कुमार नाज़

धुन दुनिया में सबसे प्यारी वन्दे मातरम्
गीत ये सब गीतों पर भारी वन्दे मातरम्

ज़ाहिद अबरोल

बंकिम में एक बार लिखा वन्दे मातरम्
दुनिया ने बार-बार पढ़ा वन्दे मातरम्

ऋषिपाल धीमान ‘‘ऋषि’’

मातृभूमि हो रही नित धन्य यह वह गीत है
गर्व से गाता है हिंदुस्तान वन्दे मातरम्

अशोक ‘अंजुम’

प्रेरणा स्वाधीनता की, मुक्ति की उद्घोषणा
शौर्य, साहस, त्याग, तप, बलिदान वन्दे मातरम्

हिमकर श्याम

प्रार्थना केवल नहीं उद्घोष वन्दे मातरम्
दुश्मनों के सामने है रोष वन्दे मातरम्

संजीव प्रभाकर

गुणगान भारती का मधुर वन्दे मातरम्
सद्भाव राष्ट्र धुन का नूपुर वन्दे मातरम्

रमेश 'कँवल'

चेतना का बोध है यह मुक्ति का उद्घोष है
राष्ट्र के प्रति प्रेम का आह्वान वन्दे मातरम्

निरुपमा चतुर्वेदी

जिस तरह "वन्दे मातरम्" गीत को अनेक धुन और स्वर मिले, उसी तरह "वन्दे मातरम्" के निहितार्थ को इस संग्रह की ग़ज़लों और अन्य रचनाओं में अनेक शब्द और छंद मिले हैं। इनमें से अनेक रचनाएं अच्छी धुन और स्वर की सहायता से हमारी स्मृति का हिस्सा बनने का गुण लिए हुए हैं। संग्रह पढ़ने के बाद बोध होता है कि "वन्दे मातरम्" नित नए स्वरूप में हमारे जन मानस को आंदोलित और आह्लादित करने को प्रस्तुत हो रहा है।

"वन्दे मातरम्" गीत इस तथ्य का साक्ष्य है कि किसी भी उत्तम रचना या कर्म को भले ही चुनौतियों का सामना करना पड़े अंततः वह अपने उचित शिखर पर पहुंच जाता है। "वन्दे मातरम्" को प्रतिबंधित किया गया, अन्य तरीकों से आगे आने से रोका गया उसके उपरांत भी यह देशप्रेम का सबसे महान गीत है। इस गीत के अनेक अनुवाद भी इस संग्रह में हैं। इस से इस गीत के भाव से शब्द आकार ग्रहण करने की प्रक्रिया और उसकी कलात्मकता को समझा जा सकता है। कहते हैं प्रत्येक अप्रतिम रचना पर दैवीय प्रभाव होता है। दिव्यता तब और बढ़ जाती है जब पूरा राष्ट्र अपनी श्रद्धा उस रचना को समर्पित करता है। यह गीत धरोहर की तरह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित होता जा

रहा है और अधिक मूल्यवान भी होता जा रहा है।जाहिद अबरोल जी ने इसी संग्रह में बिल्कुल ठीक लिखा है " यह गीत हर दौर में हर नई पीढ़ी के लिए प्रेरणा स्रोत रहा है। हंसते-हंसते मृत्यु का आलिंगन करने वाले महाबलिदानी क्रांतिकारी भी इस गीत को गाते थे और अहिंसा तथा सहिष्णुता के पुजारी के होठों पर भी विरोध प्रदर्शन करते वक्त यही गीत होता था"। यह इस गीत की शक्ति है। सच लिखा है कि

माता सरस्वती ने यह चाहा कि एक दिन
बंकिम जी उठें और रचें वन्दे मातरम्

अशोक अंजुम

कहते हैं वह देवता सबसे बड़ा होता है जिसके पुजारी और भक्त महान होते हैं | वन्दे मातरम् के पुजारी असंख्य हैं और विश्वभर में अपने संस्कारों और कर्मशीलता के लिए जाने जाते हैं। विश्व बंधुत्व का सपना लेकर जीने वाले भारतीय जन वर्तमान के वैश्विक हाहाकार में "वन्दे मातरम्" के मूल स्वर का संचार कर अपने समय को नई दिशा प्रदान करें।

इस कामना के साथ इस संग्रह के संकलन कर्ता श्री रमेश 'कँवल' और सभी रचनाकारों को हार्दिक बधाई।

दिल्ली,
वैशाख कृष्ण 5 संवत 2083
दिनांक 7 अप्रैल, 2026

विजय कुमार स्वर्णकार
मो. 995 855 6141

सुखदाम् वरदाम् मातरम्

उर्दू और हिंदी ग़ज़ल में जनाब रमेश कँवल साहित्यिक क्षेत्रों में एक जाना पहचाना लोकप्रिय नाम है। बिहार प्रशासनिक सेवा में संयुक्त सचिव के पद से सेवानिवृत्त हुए रमेश कँवल ना सिर्फ़ एक उच्चकोटि के शाइर हैं, बल्कि एक सुलझे हुए सम्पादक भी हैं। उर्दू में उनकी तख़्लीक़ात "लम्स का सूरज" और "रंगे-हुनर" तथा हिंदी में "सावन का कँवल", "शोहरत की धूप", "स्पर्श की चाँदनी", "इतराती बल खाती ग़ज़लें", और "अमृतकाल की आधुनिक ग़ज़लें" साहित्य-प्रेमियों द्वारा बहुत पसंद की गईं। जहाँ तक सम्पादन का सवाल है, वो लगभग हर साल एक दो ग़ज़ल-संग्रह संकलित कर के ग़ज़ल के रसिया लोगों को रसास्वादन हेतु प्रस्तुत करते हैं। इनकी सम्पादित पुस्तकों में अक़ीदत के फूल (2020), 2020 की नुमाइंदा ग़ज़लें (2021), 21वीं सदी के 21वें साल की बेहतरीन ग़ज़लें (2022), एक रुकनी अनूठी ग़ज़लें (2022), अमृत-महोत्सव की ग़ज़लें (2023), 75 रदीफ़ों पर ग़ज़लें (2023), क्या सुनाएँ हाले-दिल–हफ़ीज़ बनारसी (2023), आज फूलों में ताजगी कम है-हफ़ीज़ बनारसी (2023), वंदन शुभ अभिनन्दन (2023), 2024 की दिलकश ग़ज़लें (2024) और शुक्रिया शाइरी (2026) बहुत लोकप्रिय हुयी हैं। इनके द्वारा संकलित एवं सम्पादित पुस्तकें महज़ पुस्तकें नहीं, ग्रन्थ हैं इनमें से अधिकतर पुस्तकें 400 से 700 सफ़हात की हैं।

संकलन और सम्पादन का कार्य देखने में आसान लगता है लेकिन यह बहुत ही धैर्य और परिश्रम का कार्य है जिसे करने के लिये अच्छे और बुरे, सही और ग़लत की पहचान, अरूज़ और बहों के ज्ञान के साथ साथ काव्यात्मक क्षमता होनी भी आवश्यक है। शाइरों को कलाम भेजने के लिये इसरार करना, यहाँ तक कि उन्हें कोई ख़ास विषय दे कर उन से ग़ज़लें लिखवाना, फिर उन्हें जांच परख कर तरतीब देना मुश्किल ही नहीं निहायत मुश्किल काम है। श्री रमेश कँवल में यह सब ख़ूबियाँ हैं और इन सब ख़ूबियों के इलावा उनमें साहित्यिक

कार्य करने का जुनून भी है। वो न सिर्फ़ एक हिस्सास शाइर और प्रबुद्ध सम्पादक हैं, बल्कि एक बहुत ही शाइस्ता, नेकदिल, ख़ुशमिज़ाज और निडर इंसान हैं।

'वन्दे मातरम्' एक बहुत ही ख़ूबसूरत रचना है और इसे राष्ट्रीय गीत का दर्जा इसलिये नहीं मिला कि यह किसी विशेष धर्म के व्यक्ति द्वारा या किसी विशेष भाषा में रचा गया है बल्कि यह इसलिए हमारा राष्ट्रीय गीत है कि हमारे स्वाधीनता संग्राम के लगभग 70 वर्ष स्वतंत्रता सेनानियों का उदघोष रहा है। देश पर मर मिटने वाले शहीद जब फांसी के तख़्ते की तरफ़ बढ़ते थे तो उनके होंठों पर सिर्फ़ यही एक गीत होता था और उनका युद्धघोष (War Cry) भी यही होता था–**'वन्दे मातरम्'**। यह गीत हर दौर में हर नई पीढ़ी के लिये एक प्रेरणा-स्रोत रहा है। हँसते हँसते मृत्यु का आलिंगन करने वाले महाबलिदानी क्रांतिकारी भी इस गीत को गाते थे और अहिंसा और सहिष्णुता के पुजारियों के होंठों पर भी विरोध प्रदर्शन करते वक़्त यही गीत होता था।

निहायत अफ़सोस की बात है कि मातृभूमि की इस सुंदरतम् स्तुति पर एक विशेष मज़हब के कुछ स्वतंत्रता-सेनानी नेताओं ने आज़ादी के 10 वर्ष पूर्व ही इस गीत के कुछ छंदों पर एतराज़ जताया जिसके परिणाम-स्वरुप इसे विधिवत राष्ट्रीय गीत का दर्जा देने से पहले इस के 6 में से 4 छंद त्याग दिये गये। आज़ादी के ब'द भी उस विशेष समुदाय के कुछ लोग और उनके साथ कुछ राजनीतिक दल इस का पूर्णत: विरोध करते रहे हैं। **'वन्दे मातरम्'** एक स्तुति (हम्द) है न कि पूजा (इबादत)। मातृभूमि के इस स्तुति-गान की ईश-स्तुति से तुलना करना उचित नहीं। ईश्वर तो ईश्वर है, कोई स्थान, जीव एवं निर्जीव वस्तु, व्यक्ति या कोई गीत न तो उसकी प्रभुता को चुनौती दे सकता है न उसकी बराबरी कर सकता है। मातृभूमि की यह स्तुति ऐसे ही है जैसे हम अपने माता-पिता के प्रति अपना सम्मान या भक्ति-भाव ज़ाहिर करें। माँ के क़दमों में अगर जन्नत होती है तो मातृभूमि जिस का दर्जा माँ के बराबर होता है, उसे माँ के बराबर सम्मान देना ग़लत तो नहीं। भारत को ग़ुलामी की जंजीरों से मुक्त करवाने के लिये जिस तरह सभी धर्मों के बहादुर योद्धाओं ने कन्धे से कन्धा मिला कर **'वन्दे मातरम्'** का ना'रा लगते हुए मौत को गले लगा लिया, इसी तरह आज भी हम सब को मिल कर इस राष्ट्रीय-गीत को पूरा सम्मान देना चाहिए। सभी धार्मिक पुस्तकों

में यह बात स्पष्ट है कि देश-प्रेम ईमान का एक हिस्सा है और किसी भी सूरत में देश-प्रेम और ईश्वर के प्रति प्रेम के बीच कोई टकराव नहीं होना चाहिए .

इस स्तुति-संग्रह "वन्दे मातरम् में 57 शाइरों की 97 ग़ज़लें/ नज़्में/ गीत संकलित हैं। ज़ियादातर ग़ज़लें हैं, जिनका रदीफ़ **'वन्दे मातरम्'** है। कुछ शाइरों ने इस वाक्यांश **'वन्दे मातरम्'** को एक उदघोष या ना'रे के रूप में बाँधा है, कुछ ने इसे गीत का नाम दिया है, कुछ ने इसे जन्म-भूमि का समानार्थक बना दिया है और किसी ने इसे आज़ादी से पहले लाला लाजपत राय द्वारा प्रकाशित समाचार-पत्र **'वन्दे मातरम्'** के रूप में बांधा है। एक अच्छी ग़ज़ल में कोई भी शे'र और एक अच्छे शे'र में कोई भी लफ़्ज़ भर्ती का नहीं लगना चाहिए, लेकिन अगर एक ही शब्द या वाक्यांश को रदीफ़ रखने की मजबूरी हो तो उस वाक्यांश का कहीं कहीं भर्ती का शब्द बन जाना स्वाभाविक ही है। कुल मिला कर सभी ग़ज़लें / नज़्में देश-प्रेम से ओत-प्रोत हैं और **'वन्दे मातरम्'** वाक्यांश की शुद्धता और पवित्रता क़ाइम रखे हुए हैं।

इस स्तुति-संग्रह में बहुत ही कम अश्आर ऐसे हैं जो फ़न की कसौटी पर पूरे नहीं उतरते, वरना बहुधा ग़ज़लों के अश्आर काव्यात्मकता और एहसास की दृष्टि से परिपूर्ण हैं। इन ग़ज़लों के ज़रीए शाइरों ने अपने देश-प्रेम के जज़्बे के साथ साथ एक अच्छे ग़ज़लकार होने का सुबूत भी दिया है। चंद ख़ूबसूरत अश्आर मुलाहिज़ा फरमायें :

है वतन से प्यार का एहसास 'वन्दे मातरम्'
सारे ना'रों से है बढ़ कर ख़ास 'वन्दे मातरम्'

-अविनाश 'अमन'

थे वीर सब जो देश-हित में मर मिटे हँसते हुए
निकला सभी के मुख से अंतिम बार 'वन्दे मातरम्'

-डॉ. पूनम सिन्हा

जद्दो-जहद की लम्बी सी इक दास्ताँ के बीच
उम्मीद की बस एक किरण 'वन्दे मातरम्'

-मुकेश सिंहानिया

दौड़ जायें गी रगों में बिजलियाँ सी आप की
बोल कर तो देखिये इक बार 'वन्दे मातरम्'

-आनंद पाण्डेय 'तन्हा'

यह कभी उर्दू ज़बां में भी बहुत मक़बूल था
लोग पढ़ते थे सभी अख़बार 'वन्दे मातरम्'

-आनंद पाण्डेय 'तन्हा'

कहते हैं दिल से अहले-वतन 'वन्दे मातरम्'
तेरे ही दम से है यह चमन 'वन्दे मातरम्'

-अरुण कुमार आर्य

माता सरस्वती ने यह चाहा कि एक दिन
बंकिम जी उठें और रचें 'वन्दे मातरम्'

-अशोक 'अंजुम'

बहुत से शाइरों ने इस 'वन्दे मातरम्' उदघोष के ज़रीए एकता, भाईचारा और धार्मिक सद्भाव क़ाइम रखने के लिये आह्वान किया है, जैसे :

भाईचारे की ध्वजा फहराये 'वन्दे मातरम्'
सब से हिल-मिल कर रहो सिखलाये 'वन्दे मातरम्'

-नवीन. सी. चतुर्वेदी

मज़बूत होंगे हम सभी इस एकता के मन्त्र से
बुझ जाएगी हर इक तपन, सब गाओ 'वन्दे मातरम्'

-दिलीप समदर्शी

मुल्क में **'वन्दे मातरम्'** पर हो रहे विरोध से भी कवि अछूते नहीं रहे, सो कुछ कवियों ने इस गीत का विरोध करने वालों से भी गुहार लगाई है :

बोलिए जो है वतन से प्यार 'वन्दे मातरम्'
क्यों नहीं है आपको स्वीकार 'वन्दे मातरम्'

-आनंद पाण्डेय 'तन्हा'

मुल्क में चलने लगी यह कैसी नफ़रत की हवा
वक़्त है, मिल कर कहें सब यार 'वन्दे मातरम्'

-अविनाश 'अमन'

आख़िर में मैं श्री रमेश कँवल को उनके द्वारा किये गये इस कठिन कार्य की सफलता पर मुबारकबाद देता हूँ और ईश्वर से यह दुआ करता हूँ कि वो उन्हें लम्बी आयु प्रदान करें ताकि साहित्य-प्रेमियों को उन से ऐसी कई और पुस्तकें नसीब हों। अल्लाह करे ज़ोरे-क़लम और ज़ियादा। आमीन!

ज़ाहिद अबरोल
सम्पादक, 'जदीद फ़िक्रो-फ़न' (त्रैमासिक उर्दू पत्रिका)
"गुलरुख़", निकट डी०ए०वी० पब्लिक स्कूल
नंगल रोड, ऊना (हिमाचल प्रदेश)-174303
मो० 9816643939

वन्दे मातरम् की पृष्ठभूमि-रमेश 'कँवल'

ऋषि बंकिम चंद्र चटर्जी ब्रिटिश सरकार द्वारा नवसृजित कलकत्ता विश्वविद्यालय के प्रारम्भिक बैच के कला स्नातक थे। इन्हें ब्रिटिश सरकार ने डिप्टी कलेक्टर नियुक्त किया था जो बाद में डिप्टी मैजिस्ट्रैट भी हुए। अंग्रेज़ GOD SAVE THE KING गीत को जनता के लिए प्रसारित करना चाहते थे लेकिन राष्ट्रवादियों को यह पसंद नहीं आया, न ही मन भाया।

बंकिम चंद्र चटर्जी को जब वे अंग्रेज़ों की सेवा में ही थे वन्दे मातरम् सृजन का ख़याल आया। उन्होंने पश्चिम बंगाल में हुगली (गंगा) नदी के जोरा घाट के पास चिनसुरा (चुंचुड़ा) के आध्या परिवार के सफ़ेद रंग के घर में इस गीत की रचना संस्कृत निष्ठ बांग्ला भाषा में की। बंकिम चंद्र 'बंगदर्शन' मासिक पत्रिका के संपादक थे। पहली बार यह गीत7 नंवबर 1875 को 'बंगदर्शन' पत्रिका में प्रकाशित हुआ। बंकिम चंद्र चटर्जी के 1882 में सन्यासी आंदोलन की पृष्ठभूमि में लिखित और प्रकाशित उपन्यास आनन्द मठ में इसे सम्मिलित किया गया। जदुनाथ भट्टाचार्या ने पहली बार इसकी धुन बनाई। बाद में हेमंत मुखर्जी ने फ़िल्मों में इसका धुन बनाया।

वन्दे मातरम् स्वाधीनता आंदोलन में प्रतिरोध का अति प्रशंसित सर्व प्रिय गीत बन गया। अंग्रेज़ी हुकूमत ने इस पर प्रतिबंध लगा दिया। इसकी प्रतियां जब्त कर ली गईं और इसके गायन को अपराध घोषित कर लिया। अनेक लोगों को इस गीत को गाने के अपराध में जेल की यातनाएं सहनी पड़ी।

1896 में रवींद्र नाथ टैगोर ने बीडन एस्क्वाइर, कलकत्ता में हुए काँग्रेस अधिवेशन में इस गीत को गाया। पाँच वर्ष बाद 1901 में कलकत्ता में ही हुए अन्य अधिवेशन में दक्षिणा चरण सेन ने इस गीत को गाया। 1905 में बनारस में हुए काँग्रेस अधिवेशन में कवयित्री सरला देवी चौधरानी ने इस गीत को स्वर दिया।

लाला लाजपत राय ने लाहौर से वन्दे मातरम् पत्रिका का प्रकाशन शुरू किया।

हीरा लाल सेन ने 1905 में ही एक राजनीतिक फ़िल्म बनाई जिसमे क्राउन पुलिस की गोली खाने वाली मातंगिनी हाज़रा के अंतिम शब्द वन्दे मातरम् थे।

महात्मा गांधी ने इस राष्ट्रीय गान के प्रथम दो अंतरा को अपना समर्थन किया। 20 मई, 1906 को बारिसाल (अब बांग्ला देश) में दस हज़ार से ज़्यादा हिन्दू-मुसलमानों ने वन्दे मातरम् के झंडे के साथ जुलूस निकाला। 1907 में जर्मनी के स्टुटगार्ट शहर में भिकाजी कामा (1861-1936) ने राष्ट्रीय तिरंगा का प्रथम संस्करण तैयार किया जिसके मध्य भाग में वन्दे मातरम् लिखा हुआ था।

आर्य प्रिंटिंग प्रेस, लाहौर और भारतीय प्रेस, देहरादून ने 1929 में क्रांति गीतांजलि का प्रकाशन किया जिसमें मातृ वंदना शीर्षक से इस गीत के 2 छंद शामिल किए गए।

वर्ष 1937 में भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस द्वारा गठित मौलाना आज़ाद, जवाहर लाल नेहरू, सुभाष चंद्र बोस, आचार्य देव और रवींद्र नाथ टैगोर की कमिटी ने वन्दे मातरम् के 2 छंदों को राष्ट्रीय गीत के रूप में चयन किया गया।

अखिल भारतीय मुस्लिम लीग और मोहम्मद अली जिन्ना ने इस गीत का पूर्ण विरोध किया।

- स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान **"वन्दे मातरम्"** क्रांतिकारियों का उद्घोष बन गया। अंग्रेजी शासन के विरुद्ध यह एक सांस्कृतिक शंखनाद था।पचास वर्षों की इस यात्रा में **"वन्दे मातरम्"** ने विद्यालयों में बच्चों को देशभक्ति सिखाई, आंदोलनों में साहस जगाया व सांस्कृतिक कार्यक्रमों में गर्व का भाव भरा। **"वन्दे मातरम्"** ने हर भारतीय के हृदय में मातृभूमि के प्रति समर्पण जगाया।
- "वन्दे मातरम्" केवल एक गीत नहीं, बल्कि भारत की आत्मा की पुकार है। यह वह स्वर है जिसने स्वतंत्रता संग्राम के समय करोड़ों भारतीयों के हृदय में देशभक्ति की अग्नि प्रज्वलित की।

24 जनवरी 1950 में यानि 76 साल बाद इसे संविधान सभा द्वारा राष्ट्र गीत की मान्यता दी गई। एवं इसे राष्ट्र गान "जन गण मन" के समान सम्मान देने का निर्णय लिया गया।

मद्रास उच्च न्यायालय ने जुलाई 2017 में पारित निर्णय में निर्देश दिया कि वन्दे मातरम् को कम से कम प्रति सप्ताह एक दिन विद्यालयों, विश्व विद्यालयों और अन्य शैक्षणिक संस्थानों में निश्चित रूप से गाया जाए। इसे महीने में कम से कम एक बार सभी सरकारी कार्यालयों और औद्योगिक स्थलों पर प्रस्तुत या गाया जाए। लेकिन नवंबर, 2017 में उन्होंने अपना आदेश वापस लेते हुए तमिलनाडु सरकार को निर्णय लेने के लिए छोड़ दिया।

वन्दे मातरम् गीत सृजन के 150 वें वर्ष (2025 में) भारतीय संसद में **"वन्दे मातरम् राष्ट्रीय गीत अनिवार्यता विधेयक, 2025"** (Vande Mataram National Song Compulsory Bill, 2025) प्रस्तुत किया गया।

नया बिल और संसद की बहस

- संसद में प्रस्ताव रखा गया कि "वन्दे मातरम्" को हर सरकारी कार्यक्रम में अनिवार्य रूप से गाया जाए।
- इस पर बहस हुई कि क्या यह धार्मिक विविधता और संवैधानिक मूल्यों के अनुरूप है।
- कुछ सांसदों ने इसे राष्ट्रभावना को मजबूत करने वाला क़दम बताया, जबकि अन्य ने इसे सांप्रदायिक तनाव बढ़ाने वाला बताया।
- यह विधेयक **शीतकालीन सत्र (Winter Session)** में पेश किया गया था, जो **1 दिसंबर 2025 से 19 दिसंबर 2025** तक चला।
- इस सत्र में कुल 10 सरकारी विधेयक प्रस्तुत हुए और 8 विधेयक पारित किए गए।
- *वन्दे मातरम्* से संबंधित विधेयक भी इन्हीं में शामिल था और इसे **19 दिसंबर 2025** को पारित किया गया, जब लोकसभा और राज्यसभा दोनों को *साइन डाई* (sine die) स्थगित किया गया।

- विधेयक का मुख्य उद्देश्य था कि *वन्दे मातरम्* को सभी सरकारी कार्यक्रमों और औपचारिक अवसरों पर अनिवार्य रूप से गाया जाए।इस के औपचारिक पाठ के लिए 3 मिनट 10 सेकंड का समय निर्धारित किया गया।
- राष्ट्रीय एकता और देशभक्ति को सुदृढ़ करना।

केंद्र सरकार ने भारत के राष्ट्रीय गीत वन्दे मातरम् के गायन के लिए आधिकारिक प्रोटोकॉल को लेकर व्यापक दिशा-निर्देश जारी किया। इसमें बताया गया है कि सरकारी समारोहों में इसे कैसे और कब प्रस्तुत किया जाना चाहिए। राष्ट्रगीत के समय दर्शकों का आचरण कैसा होना चाहिए इसके बारे में भी बताया गया है।

केंद्रीय गृह मंत्रालय की तरफ से जारी नए निर्देशों का उद्देश्य देश भर में सार्वजनिक और आधिकारिक कार्यक्रमों में राष्ट्रगान की स्थिति और औपचारिक भूमिका को स्थापित करना है, जिसमें राजकीय समारोहों और संस्थागत सभाओं के दौरान इसके पालन पर अधिक ज़ोर दिया गया है। दिशानिर्देशों के अनुसार, वन्दे मातरम् का संपूर्ण आधिकारिक संस्करण, जिसमें छह श्लोक हैं और जिसकी अवधि लगभग 3 मिनट और 10 सेकंड है, प्रमुख राजकीय समारोहों के दौरान प्रस्तुत या बजाया जाना चाहिए। इनमें राष्ट्रीय ध्वज फहराना, राष्ट्रपति और राज्यपालों के आधिकारिक कार्यक्रमों में औपचारिक आगमन और प्रस्थान समारोह और ऐसे समारोहों में उनके निर्धारित भाषणों से पहले और बाद के कार्यक्रम शामिल हैं। छह छंदों वाला राष्ट्रगीत पढ़ना अनिवार्य कर दिया गया।

1. राष्ट्रगीत को लेकर नया प्रोटोकॉल-

- अगर किसी कार्यक्रम में ‘वन्दे मातरम्’ व ‘राष्ट्रगान’ दोनों होने हैं, तो पहले ‘वन्दे मातरम्’ गाया जाएगा और उसके बाद ‘राष्ट्रगान’।
- दर्शकों से अपेक्षा की जाती है कि वे सम्मान के प्रतीक के रूप में दोनों प्रदर्शनों के दौरान सावधान मुद्रा में खड़े रहेंगे।

- गृह मंत्रालय ने शिक्षण संस्थानों से दैनिक विद्यालय सभाओं और महत्वपूर्ण संस्थागत कार्यक्रमों के दौरान वन्दे मातरम् गाने को बढ़ावा देने का भी आग्रह किया है।
- इस क़दम का उद्देश्य छात्रों और आम जनता के बीच राष्ट्रीय प्रतीकों के प्रति जागरूकता और सम्मान को प्रोत्साहित करना है।
- औपचारिक स्पष्टता सुनिश्चित करने के लिए, दिशानिर्देशों में यह अनुशंसा की गई है कि जब वन्दे मातरम् का प्रदर्शन किसी बैंड द्वारा किया जाता है, तो उससे पहले ढोल की थाप या बिगुल की ध्वनि से औपचारिक रूप से गायन की शुरुआत का संकेत दिया जाना चाहिए।

सिनेमा-हॉल के लिए दी गई छूट-

- साथ ही, मंत्रालय ने सिनेमा हॉल और फ़िल्म स्क्रीनिंग के लिए विशिष्ट छूट प्रदान की है।
- फ़िल्म के साउंडट्रैक के हिस्से के रूप में वन्दे मातरम् बजाए जाने पर दर्शकों को खड़े होने की आवश्यकता नहीं होगी,
- क्योंकि मनोरंजन स्थलों में दर्शकों को खड़े होने के लिए मजबूर करने से देखने का अनुभव बाधित हो सकता है और संभावित रूप से दर्शकों के बीच भ्रम पैदा हो सकता है।
- इस क़दम का उद्देश्य राष्ट्रगान से संबंधित औपचारिक प्रोटोकॉल में लंबे समय से चली आ रही कमी को दूर करना है।

प्रस्तुति : **रमेश 'कँवल'**

वन्दे मातरम् स्तुति संग्रह की परिकल्पना-रमेश 'कँवल'

राष्ट्रीय गीत वन्दे मातरम् के सृजन के 150 वर्ष पूरे होने पर देश में पूरे वर्ष भर विभिन्न तरह के कार्यक्रमों के आयोजन की घोषणा होने से मन प्रफुल्लित हो गया। ख़याल आया कि क्यों नहीं वन्दे मातरम् रदीफ़ रखकर किसी भी बह्र में किसी भी क़ाफ़िया के साथ ग़ज़लों/ नज़्मों की एक किताब प्रकाशित कराई जाए। अपने फ़ेसबुक और व्हाट्सप्प के विभिन्न समूहों में मैंने अपनी अभिलाषा प्रकट की। मित्रों ने इसे सराहा। साथ देने की उम्मीद जगाई। जल्द ही ग़ज़ल के सशक्त हस्ताक्षरों ने अपनी रचनाएं भेजनी शुरू कर दी। लेकिन यह काम इतना सरल नहीं था। मित्रों ने वन्दे मातरम् रदीफ़ को निभाने में कठिनाइयाँ व्यक्त की। मेरे मित्र श्री अरुण कुमार आर्य जिन्होंने उरुज पर "शायरी का ज्ञान" पुस्तक लिख कर शायरी करने वाले नवोदित और अनुभवी शायरों की जिज्ञासाओं को शांत किया ने कुछ बह्रों में मिसरा तरह देकर वन्दे मातरम् रदीफ़ रखकर ग़ज़ल कहने वालों की मुश्किलों को आसान किया। विभिन्न बह्रों में दिए गए मिसरे निम्न वत हैं-

रदीफ़ 'वन्दे मातरम्' वाले कुछ तरही मिसरे-

1. **बह्र: रमल मुसम्मन मह्ज़ूफ़।**
   अर्कान: फ़ाइलातुन फ़ाइलातुन फ़ाइलातुन फ़ाइलुन।
   मात्राक्रम-2122 2122 2122 212
   मिस्रा: हो कोई भी दिन महीने साल वन्दे मातरम्
   क़ाफ़िया: हाल, काल, ढाल इत्यादि।

2. **बह्र: हज़ज मुसम्मन मक़्बूज़।**
   अर्कान: मफ़ाइलुन मफ़ाइलुन मफ़ाइलुन मफ़ाइलुन।

मात्राक्रम: 1212 1212 1212 1212.

मिस्रा: जहाँ में है वतन मेरा महान् वन्दे मातरम्

क़ाफ़िया: समान, ज़बान, निशान इत्यादि।

3. **बह्र: रजज़ मुसम्मन सालिम**

   अर्कान: मुस्तफ़एलुन मुस्तफ़एलुन मुस्तफ़एलुन मुस्तफ़एलुन।

   मात्राक्रम: 2212 2212 2212 2212.

   मिस्रा: भारत की तू है आन, बान और शान वन्दे मातरम्

   क़ाफ़िया: जान, हिन्दुस्तान, क़ुर्बान इत्यादि।

4. **बह्र: मुज़ारे मुसम्मन अख़रब मक्फ़ूफ़ मह्ज़ूफ़।**

   अर्कान: मफ़ऊलु फ़ाइलातु मफ़ाईलु फ़ाइलुन।

   मात्राक्रम: 221 21 21 1221 212.

   मिस्रा: कहते हैं दिल से अहल-ए-वतन वन्दे मातरम्

   क़ाफ़िया: चमन, गगन, लगन इत्यादि।

5. **बह्र: कामिल मुसम्मन सालिम मुज्मर सालिम मुज्मर (शिकस्ता बह्र)**

   अर्कान: मुतफ़ाइलुन मुस्तफ़इलुन, मुतफ़ाइलुन मुस्तफ़इलुन।

   मात्राक्रम: 11212 2212, 11212 2212.

   मिस्रा:दिल-ओ-जान तेरे ही लिए, है निसार वन्दे मातरम्

   क़ाफ़िया: निसार, प्यार, ख़ुमार इत्यादि।

इतना इशारा काफ़ी था। 1 मार्च, 2026 तक मुझे 11-12 राज्यों के 30-35 शहरों से 57 कवि-कवयित्रियों ने वन्दे मातरम् रदीफ़ पर 97 स्तुति गान का सृजन कर दिया। कुछ कवियों ने 2 से 4 रचनाएं प्रेषित कर दीं जो एक से बढ़ कर एक हैं।इसलिए मैंने सभी को वन्दे मातरम् स्तुति संग्रह में सम्मिलित कर लिया है।

कुछ कवि-कवयित्रियों की रचनाओं में बह्र की कुछ त्रुटियों का परिमार्जन भी किया गया है।आशा है वे इसे अन्यथा नहीं लेंगे।

बिहार के 6 शहरों, जम्मू के 1, झारखंड के 3, छतीसगढ़ के 1, गुजरात के 2, मध्यप्रदेश के 2, महाराष्ट्र के 3, राजस्थान के 3 हरियाणा के 1, हिमाचल प्रदेश के 1 और उत्तर प्रदेश के 9 शहरों तथा राजधानी दिल्ली से प्राप्त रचनाओं का आनन्द लीजिए और उनका उत्साहवर्धन कीजिए।

सभी रचनाकारों की जन्मतिथि, शहर, मोबाइल नंबर और फ़ोटो उनकी रचनाओं के साथ दिए गए हैं। आप उन्हें जन्मदिवस की शुभकामनाएं भी दे सकते हैं। पुस्तक के अंत में रचनाकारों की जन्मतिथि, शहर और मोबाइल नंबर भी अलग से दिए गए है

चूंकि मैंने ऋषि बंकिम चंद्र कॉलेज, नैहाटी (24 परगना, पश्चिम बंगाल) जो बंकिम चंद्र के निवास स्थल काँटाल पाड़ा से नज़दीक है, 1972 में विज्ञान स्नातक किया है इसलिए मैं इस गुरु स्थली को नमन करना अपना विशेष दायित्व समझता हूँ।

आशा है प्रबुद्ध राष्ट इस से लाभान्वित होगा

यथास्तु

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा संवत 2083
गुरुवार 19 मार्च, 2026

रमेश 'कँवल'
मोबाइल 878 976 1287

वन्दे मातरम् (मूल कृति)

वन्दे मातरम्
वन्दे मातरम्। सुजलाम् सुफलाम् मलयजशीतलाम्,
शस्यश्यामलाम् मातरम्। वन्दे मातरम्।।1।।

शुभ्रज्योत्स्ना पुलकितयामिनीम्,
फुल्लकुसुमित द्रुमदलशोभिनीम्,
सुहासिनीम् सुमधुरभाषिणीम्,
सुखदाम् वरदाम् मातरम्। वन्दे मातरम्।।2।।

कोटि-कोटि कण्ठ कल-कल निनाद कराले,
कोटि-कोटि भुजैधृत खरकरवाले,
के वॉले माँ तुमि अबले,
बहुवलधारिणीं नमामि तारिणीम्,
रिपुदलवारिणीं मातरम्। वन्दे मातरम्।।3।।

तुमि विद्या तुमि धर्म, तुमि हृदि तुमि मर्म,
त्वम् हि प्राणाः शरीरे, बाहुते तुमि माँ शक्ति,
हृदये तुमि माँ भक्ति, तोमारेई प्रतिमा गड़ि मन्दिरे-मन्दिरे। वन्दे मातरम्।।4।।

त्वम् हि दुर्गा दशप्रहरणधारिणी,
कमला कमलदलविहारिणी,
वाणी विद्यादायिनी, नमामि त्वाम्,
नमामि कमलाम्, अमलाम् अतुलाम्,
सुजलां सुफलां मातरम्। वन्दे मातरम्।।5।।

श्यामलाम् सरलाम् सुस्मिताम् भूषिताम्,
धरणीम् भरणीम् मातरम्। वन्दे मातरम्।।6।।

राष्ट्रगीत वन्दे मातरम् का मूल राग में भावानुवाद

1

वन्दे मातरम्
सुजले सुफले शीतल मलय पवन
ओ हरी भरी मातु मम
वन्दे मातरम्

2

रात्रि बिखेरे चमचम चाँदनी
और धरती मह मह महक रही
सदा सुखी रसना है शहद सनी
सुख वर दात्री मातु मम
वन्दे मातरम्

3

कोटि कोटि कण्ठ पल पल बखान सुनाएं
कोटि कोटि हुतात्मा बिछ बिछ जाएं
अबला है तू कौन कहे
बहुबल धारिणी नमामि तारिणी
रिपुदल वारिणी मातु मम
वन्दे मातरम्

4

तू ही विद्या तू ही धर्म
तू ही हृदय तू ही मर्म
तू ही प्राण है तन भी
तू ही है बल बाँहों का
उर में तेरी ही भक्ति
तेरी ही प्रतिमा
मन्दिरों में स्थापित है माँ
वन्दे मातरम्

5

तू ही दुर्गा
दस भुज आयुध हैं सजे
लक्ष्मी कमल पर विराजती
वाणी विद्या दायिनी तुझे नमन
नमामि कमले अमले अतुले
सुजले सुफले मातु मम
वन्दे मातरम्

6

श्यामले सरले सुष्मिते भूषिते
धरणी भरणी मातु मम
वन्दे मातरम्

नवीन सी. चतुर्वेदी
ब्रजगजल प्रवर्तक एवं बहुभाषी शायर
मथुरा-मुम्बई
चलभाष–996 702 4593

वन्दे मातरम् का उर्दू काव्यानुवाद

अनुवादक : ज़ाहिद अबरोल

ऐ माँ तुझे सलाम!

1

जल से फल-फूलों से भरी तू
तेरी बादे-नसीम[1] का जादू
आठों पहर बिखेरे हर सू
ठण्डी, मीठी, ऊदी[2] ख़ुशबू
फ़स्लें ख़ुशहाली का पयाम
ऐ माँ तुझे सलाम!

2

रात चांदनी से है दरख़्शां[3]
तू ख़ुशियों का एक गुलिस्तां
फूल शिगुफ़्ता[4], गंजे-दरख़्तां[5]
रुख़ पे तबस्सुम, लब हैं दुरफ़शां[6]
बख़्शे तू फैज़ो-अकराम[7]
ऐ माँ तुझे सलाम!

3

हम्दसरा[8] हैं हल्क़[9] करोड़ों
तेग़-ब-कफ़[10] हैं बाज़ू लाखों

कौन कहे है तुझ को अबला
तू ज़ोरआवर, तू ही खिवैय्या
पार लगाये सब की नैय्या
दुश्मन का करे काम तमाम
ऐ माँ तुझे सलाम!

4

तू ही इल्म है, तू ईमान
क़ल्ब[11] में तू, तू ही इरफ़ान[12]
तू ही हमारे जिस्म में जान
तू शक्ति, भक्ति की सूरत
हर मंदिर में तेरी मूरत
देखूँ मैं हर सुब्हो-शाम
ऐ माँ तुझे सलाम!

5

हथियारों से लैस तू दुर्गा
तू ही कमलिनी, लक्ष्मी माता
तू ही इल्मो-ज़बां[13] का मम्बा[14]
तू ही आबो-नबात[15] का मब्दा[16]
तू धन की देवी पाकीज़ा[17]
लासानी[18] है तिरा मुकाम
ऐ माँ तुझे सलाम!

6

सांवली, सरल, मुज़य्यिन[19] तू माँ
तू ख़ुशख़ुल्क़[20], शिगुफ़्ता-रू[21] माँ
तू ही मुहाफ़िज़[22], तू ही निगहबाँ[23]
तू परवरो[24]-मा’बूदा[25]-ए-ज़ीशां[26]
तू ही सँवारे सब के काम
ऐ माँ तुझे सलाम!

ज़ाहिद अबरोल
“गुलरुख़”, निकट डी०ए०वी० पब्लिक स्कूल
नंगल रोड, ऊना (हि०प्र०)-174303; मो०:9816643939

---

1 शीतल, मंद और सुगन्धित हवा, 2. चन्दन की महक वाली, 3. प्रकाशमान, 4. खिले हुए फूल, 5. वृक्षों के झुण्ड, 6. मोती लुटाने वाला, मधुरभाषी, 7. उपकार और कृपा, 8. स्तुति-गायन, 9. कंठ, 10. हाथों में तलवार पकड़े तैयार, 11. हृदय, 12. आध्यात्मिक ज्ञान, 13. स्रोत, 14. उत्पत्ति-स्थान, 15. जल एवं वनस्पति, 16. विद्या और वाणी, 17. पवित्रा, 18. अद्वितीय, 19. सुसज्जित, 20. सदवृत्त 21. प्रसन्न-मुख, 22. रक्षक, 23. संरक्षक, 24. पालनकर्ता, 25. पूज्या, 26. महिमावान

वन्दे मातरम् का हिन्दी अनुवाद-अर्थ

पहला छंद

वन्दे मातरम्।
सुजलां सुफलां मलयजशीतलाम्
शस्यश्यामलां मातरम्।
वन्दे मातरम्॥

हिंदी अनुवाद

हे मातृभूमि! मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ।
तुम जल से परिपूर्ण हो, फलों से समृद्ध हो,
मलय पर्वत की शीतल सुगंधित हवा से शीतल हो,
धान की हरियाली से लहलहाती हो—
हे माँ, तुम्हें नमन है।

दूसरा छंद

शुभ्रज्योत्स्ना पुलकित यामिनीम्
फुल्लकुसुमित द्रुमदलशोभिनीम्
सुहासिनीं सुमधुर भाषिणीम्
सुखदां वरदां मातरम्॥

हिंदी अनुवाद

चाँदनी से उजली और आनंद से पुलकित रातों वाली,
खिले हुए फूलों और पत्तों से सुसज्जित वृक्षों वाली,
मधुर मुस्कान और मीठी वाणी वाली,

सुख देने वाली और वरदान देने वाली माँ—
तुम्हें प्रणाम।

तीसरा छंद

कोटि-कोटि कण्ठ कलकल निनाद कराले
कोटि-कोटि भुजैर्धृत खरकरवाले
के बोले मा! तुमि अबले?
बहुबल धारिणीं नमामि तारिणीं
रिपुदलवारिणीं मातरम्॥

हिंदी अनुवाद

करोड़ों कंठों से गूंजती तुम्हारी जयध्वनि,
करोड़ों भुजाओं में शस्त्रों की शक्ति,
कौन कहता है, माँ, कि तुम निर्बल हो?
असीम शक्ति की धारिणी,
शत्रुओं का नाश करने वाली,
उद्धार करने वाली माँ—
तुम्हें प्रणाम।

चौथा छंद

तुमि विद्या तुमि धर्म
तुमि हृदि तुमि मर्म
त्वं हि प्राणा शरीरे।
बाहुते तुमि मा शक्ति

हृदये तुमि मा भक्ति

तोमारइ प्रतिमा गढ़ि

मन्दिरे मन्दिरे॥

हिंदी अनुवाद

तुम ही ज्ञान हो, तुम ही धर्म हो,

तुम ही हृदय हो, तुम ही आत्मा का मर्म हो।

तुम ही हमारे शरीर की प्राणशक्ति हो।

भुजाओं में तुम्हारी ही शक्ति है,

हृदय में तुम्हारी ही भक्ति है।

हर मंदिर में हम तुम्हारी ही प्रतिमा स्थापित करते हैं।

पाँचवाँ छंद

त्वं हि दुर्गा दशप्रहरणधारिणी

कमला कमलदल विहारिणी

वाणी विद्यादायिनी नमामि त्वाम्।

नमामि कमलाम्

अमलाम् अतुलाम्

सुजलां सुफलां मातरम्॥

हिंदी अनुवाद

तुम ही दसों अस्त्र धारण करने वाली दुर्गा हो,

कमल पर विराजमान लक्ष्मी हो,

ज्ञान देने वाली सरस्वती हो—

मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ।

निर्मल, अतुलनीय,
जल और फल से परिपूर्ण
हे मातृभूमि, तुम्हें नमन।

छठा छंद

श्यामलां सरलां सुस्मितां भूषिताम्
धरणीं भरणीं मातरम्।
वन्दे मातरम्॥

हिंदी अनुवाद

श्यामल, सरल और मधुर मुस्कान से सुसज्जित,
सबका पालन-पोषण करने वाली
हे धरती-माता—
मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ।

अंग्रेज़ी अनुवाद

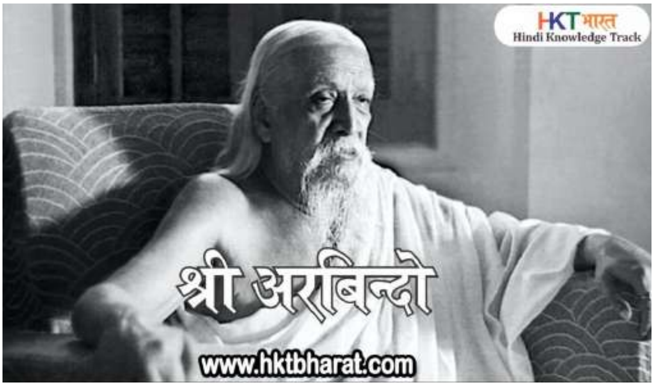

Translation in VERSE form by Shri Aurobindo

I bow to thee, Mother,
richly-watered, richly-fruited,
cool with the winds of the south,
dark with the crops of the harvests,
The Mother!

Her nights rejoicing in the glory of the moonlight,
her lands clothed beautifully with her trees in flowering bloom,
sweet of laughter, sweet of speech,
The Mother, giver of boons, giver of bliss!

Terrible with the clamorous shouts of seventy million throats,
and the sharpness of swords raised in twice seventy
million hands,
who sayeth to thee, Mother, that thou are weak?
Holder of multitudinous strength,

I bow to her who saves,
to her who drives from her the armies of her foes,
The Mother!

Thou art knowledge, thou art conduct,
thou art heart, thou art soul,
for thou art the life in our body.
In the arm, thou art might, O Mother,
in the heart, O Mother, thou art love and faith,
it is thy image we raise in every temple.

For thou art Durga holding her ten weapons of war,
Kamala at play in the lotuses
And speech, the goddess, giver of all lore,
to thee I bow!
I bow to thee, goddess of wealth
pure and peerless,
richly-watered, richly-fruited,
The Mother!

I bow to thee, Mother,
dark-hued, candid,
sweetly smiling, jeweled and adorned,
the holder of wealth, the lady of plenty,
The Mother!

अनिल कुमार सिंह

जन्मतिथि-2 जनवरी, 1959

पाटलिपुत्र कॉलनी, पटना 800013

मोबाइल नंबर–943 115 0967

1

माँ भारती तुझको नमन सौ बार वन्दे मातरम्
है स्वर्ग से बढ़ कर तेरा आकार वन्दे मातरम्

पानी हवा मिट्टी से तेरे है ये पोषित देह माँ
हम सब के इस जीवन का तू आधार वन्दे मातरम्

पावन नदी धरती हरी फल फूल से क्यारी लदी
शीतल पवन सुरभित तेरे घर द्वार वन्दे मातरम्

तेरे चरण रज को पखारे सात सागर रात दिन
पर्वत रतन तेरे गले का हार वन्दे मातरम्

दुश्मन अगर तिरछी नज़र तुझ पर करे भूले से भी
कर दें उसे मिसमार सीमा पार वन्दे मातरम्

हम सब करोड़ों पुत्र तेरी आन पर क़ुर्बान हैं
तेरे इशारे पर दें जीवन वार वन्दे मातरम्

हे मातृभू तुझ पर ही न्योछावर 'अनिल' जीवन करे
रक्षा में तेरी हर घड़ी तैयार वन्दे मातरम्

2

देश भारत हमको प्यारा बोल वन्दे मातरम्
जब सुनें दे कान में रस घोल वन्दे मातरम्

पुत्र भारत माँ के जब समवेत स्वर गायन करें
दे हृदय के गांठ सारी खोल वन्दे मातरम्

शक्ति शाली मंत्र है ये साक्षी है इतिहास भी
वक़्त पर रच दे नया भूगोल वन्दे मातरम्

चाँद तारे और सूरज में है धुन इसकी ही सुन
गा रहे नदियों के भी किल्लोल वन्दे मातरम्

है छिपी इसमें हमारी क्रांति की अद्भुत कथा
तेरे सारे शब्द हैं अनमोल वन्दे मातरम्

माँ के जैसी पालती है हमको धरती फिर 'अनिल'
क्यों न गाएँ हम बजा कर ढ़ोल वन्दे मातरम्

अमित 'अहद'

जन्मतिथि: 23 जून 1981

सहारनपुर (उ. प्रदेश)-247129

मोबाइल नंबर : 09675150538

1

अपनी तो धड़कनों में बसा वन्दे मातरम्
हर पल ही अपने दिल ने कहा वन्दे मातरम्

हर भारतीय को इसे गाना ही चाहिए
बंकिम ने इसलिए ही लिखा वन्दे मातरम्

हो डेढ़ सौ बरस भले ही उम्र इसकी अब
फिर भी लगे है दिल को नया वन्दे मातरम्

सज्दा जो मातृभूमि को करते नहीं कभी
गाना उन्हें सिखा दे ख़ुदा वन्दे मातरम्

ज़ालिम के सामने इसे गाते हुए डटो
ज़ुल्मो-सितम की एक दवा वन्दे मातरम्

कैसे न देशभक्ति पे शक उसकी हो हमें
लगता है जिस बशर को बुरा वन्दे मातरम्

सदियों से ज़ुल्म साथ में इसके हुआ 'अहद'
लेकिन किसी से भी न डरा वन्दे मातरम्!

2

इसको गाने का चले अब तो चलन,
शान है भारत की वन्दे मातरम्

कह रहा है एक सुर में ये वतन,
शान है भारत की वन्दे मातरम्

राजनीति हो न इसके नाम पर,
हम जुटें जी जान से इस काम पर

आओ मिलकर कुछ करें ऐसा जतन,
शान है भारत की वन्दे मातरम्

बैर आपस में नहीं रखते हैं हम,
एक सुर में मिल के गाते हैं इसे

अपनी तो तहज़ीब है गंग ओ जमन,
शान है भारत की वन्दे मातरम्

ये तराना है विरासत हिंद की,
तुम सजा लो अपने होंठों पर इसे

कह रहे हैं बात ये धरती गगन,
शान है भारत की वन्दे मातरम्

गोद में जिसकी पले खेले हैं हम,
जान जाए उसकी ख़ातिर क्या है ग़म

उस धरा को आओ करते हैं नमन,
शान है भारत की वन्दे मातरम्

तोड़कर दीवारें मज़हब की 'अहद',
हिंदू मुस्लिम सिख ईसाई गाएं सब

आओ मिलकर अब करें इस पर मनन,
शान है भारत की वन्दे मातरम्!

अरुण कुमार आर्य

जन्मतिथि-16 मई, 1955
दानापुर कैंट, पटना-801503,
मोबाइल-8210700727,

1

कहते हैं दिल से अहल-ए-वतन वन्दे मातरम्
तेरे ही दम से है ये चमन वन्दे मातरम्

खिलते हैं तेरी गोद में माँ हर तरह के फूल
कितना हसीं है अपना चमन वन्दे मातरम्

आज़ादी इस वतन को दिलाने के वास्ते
वीरों ने सर पे बाँधा कफ़न वन्दे मातरम्

नदियाँ पखारती है तेरे पाँओ प्यार से
ख़ुशबू बिखेरती हैं पवन वन्दे मातरम्

कोई बड़ा न छोटा यहाँ सब समान है
तहज़ीब अपनी गंगो-जमन वन्दे मातरम्

शीतल हवा भी तू है, गुलाबी फ़िज़ा भी तू
सूरज की तरह तुझमें तपन वन्दे मातरम्

मेरा वजूद 'अरुण' है तेरी ही दुआओं से
माँ भारती तुझे है नमन वन्दे मातरम्

2

भारत की तू है आन, बान और शान वन्दे मातरम्
है कितना पावन मेरा हिंदुस्तान वन्दे मातरम्

गंगा का निर्मल धारा तू, जमुना की तू ही मौज है
चंचल पवन की तू है मीठी तान वन्दे मातरम्

हिन्दू, मुसलमाँ, सिख, ईसाई सब वतन के फूल हैं
गुलशन सा महका मेरा हिंदुस्तान वन्दे मातरम्

तेरे ही साये में पला, तेरे ही दम से हूँ खड़ा
तू मेरी माँ और मैं तेरी सन्तान वन्दे मातरम्

चंदा की तुझमें चाँदनी, सूरज की तुझमें ताप है
ममतामयी तेरी मधुर मुस्कान वन्दे मातरम्

सुख सब को देने वाली माँ, दु:ख सब के हरने वाली माँ
हो क्यूँ न तुझ पर दिल मेरा क़ुर्बान वन्दे मातरम्

तेरे लिए जीना मेरा, तेरे लिए मरना 'अरुण'
मेरी ज़बाँ पर है तेरा गुणगान वन्दे मातरम्

अविनाश अमन

जन्मतिथि-19 जनवरी, 1978

हनुमाननगर, पटना-800026

मोबाइल 787 067 8786

1

क़ल्ब के जज़्बात का इज़हार वन्दे मातरम्
हमको अपने मुल्क से है प्यार वन्दे मातरम्

इससे बढ़कर खूबसूरत मुल्क दुनिया में नहीं
हिन्द है क़ुदरत का इक शहकार वन्दे मातरम्

हमको है शफ़क़त मुहब्बत और अक़ीदत इससे ही
चाहतों का इक हसीं संसार वन्दे मातरम्

मुल्क में चलने लगी ये कैसी नफ़रत की हवा
वक़्त है मिल कर कहें ऐ यार वन्दे मातरम्

एक धागे में पिरोया था हमें इसने कभी
जाने कैसे अब हुआ दीवार वन्दे मातरम्

जोश दोबाला जवानों का हुआ जाता है तब
गूंजता नारा है जब इक बार वन्दे मातरम्

2

इक अक़ीदत और है अख़लास वन्दे मातरम्
हिन्द के असलाफ़ की मीरास वन्दे मातरम्

है वतन से प्यार का एहसास वन्दे मातरम्
सारे नारों से है बढ़कर खास वन्दे मातरम्

ख़ून की स्याही से लिक्खी हुर्रियत की दास्ताँ
जंगे आज़ादी का है किरतास वन्दे मातरम्

जंगे आज़ादी में जब छाई हुई थी तीरगी
रौशनी को था हमारे पास वन्दे मातरम्

क़ल्ब के अंदर से है आती सदा जय हिन्द की
देश के आशिक़ की है हर सांस वन्दे मातरम्

अशोक 'अंजुम'

जन्मतिथि-25 सितंबर, 1966

अलीगढ़ : 202002 (उत्तर प्रदेश)

मोबाइल : 9258779744

1

तुम भी कहो, हम भी कहें वन्दे मातरम्!
हर हाल में मिल-जुल के जपें वन्दे मातरम्!

सोते हुओं को जिसने जगाया है कड़क कर
अब भी जो सो रहे वो जगें वन्दे मातरम्!

कैसे भी हों तूफ़ान ये सीने पे झेल ले
पैठी हैं इसकी गहरी जड़ें वन्दे मातरम्!

माता सरस्वती ने ये चाहा कि एक दिन
बंकिम जी उठें, उठ के रचें वन्दे मातरम्!

मां भारती की ओर कोई बद नज़र करे
हर कंठ से सुर फूट पड़ें वन्दे मातरम्!

इस राष्ट्रधर्म से न कोई धर्म बड़ा है
हर दिल में यही फूल खिलें वन्दे मातरम्!

अपनी अनेकता में भी इस एकता को देख
जलते हैं शत्रु जलते रहें वन्दे मातरम्!

2

भारती के भाल की है शान वन्दे मातरम्
देश के सब लाड़लों का गान वन्दे मातरम्

जो मुखौटे ओढ़ कर ग़द्दारियों में हैं लगे
है ये उन पर शब्द का संधान वन्दे मातरम्

क्यों न इतराएं ये रग-रग में हमारी बह रहा
है हमारा हर तरह अभिमान वन्दे मातरम्

मातृभूमि हो रही नित धन्य ये वो गीत है
गर्व से गाता है हिन्दुस्तान वन्दे मातरम्

आंच आने दी न इसकी अस्मिता पर दोस्तो
वीर गाकर हो गए बलिदान वन्दे मातरम्

कुछ कपूतों ने कहा इसको नहीं गाएंगे हम
देश के हर पूत की पहचान वन्दे मातरम्

ये जो आज़ादी है इसपे हैं तेरे अहसां बहुत
हर तरह हम तुझ पे हैं क़ुर्बान वन्दे मातरम्

आनन्द पांडेय 'तन्हा'

जन्मतिथि--31अगस्त, 1957

कानपुर-208011

मोबाइल–936 911 0036

1

बोलिये, जो है वतन से प्यार, 'वन्दे मातरम्',
क्यों नहीं है आपको स्वीकार 'वन्दे मातरम्'।

दौड़ जाएँगी रगों में बिजलियाँ सी आपकी,
बोल कर तो देखिये इक बार 'वन्दे मातरम्'।

जान जो क़ुर्बान करते थे वतन के वास्ते,
बोल कर वे चूमते थे दार 'वन्दे मातरम्'।

यह कभी उर्दू ज़ुबाँ में भी बहुत मक़बूल था,
लोग पढ़ते थे सभी अख़बार 'वन्दे मातरम्'।

देश पर क़ुर्बान होना यह सिखाता है हमें,
कर रहा झँकृत दिलों के तार 'वन्दे मातरम्'।

देख कर हमको तसल्ली हो रही है दोस्तो,
कह रही है फ़ख़्र से सरकार 'वन्दे मातरम्'।

मूलतः भारत सनातन धर्म का ही देश है,
कीजिये मत बोलना दुश्वार 'वन्दे मातरम्'।

देश में कोई नहीं है आज बंकिमचन्द्र सा,
लिख सकेगा क्या कोई फ़नकार 'वन्दे मातरम्'।

2

जो है वतन से प्यार कहें वन्देमातरम,
भूलें न, बार-बार कहें वन्दे मातरम्।

सिहरन सी दौड़ जाएगी नस-नस में आपके,
है शब्द शानदार कहें वन्दे मातरम्।

जो हैं वतनपरस्त उन्हें उज़्र नहीं है,
तोहमत लगें हज़ार कहें वन्दे मातरम्।

लाज़िम यही कि आप मुख़ालिफ़ नहीं बनें,
जब लोग बेशुमार कहें वन्दे मातरम्।

इससे अज़ीम और नहीं जज़्ब: है कोई,
बढ़ जाएगा वक़ार कहें वन्दे मातरम्।

मज़हब न ज़ात-पात हमें अब जुदा करे,
है वक़्त की पुकार कहें वन्दे मातरम्।

भारत अखण्ड राष्ट्र बने कोशिशें करें,
मानें कभी न हार कहें वन्दे मातरम्।

आराधना प्रसाद

जन्मतिथि-23 मई, 1973

कंकड़बाग, पटना-800020

मोबाइल नंबर–725 060 6100

1

देश का सम्मान, वन्दे मातरम्
माटी की पहचान, वन्दे मातरम्

शूर, योद्धा, वीर सीमा पर डटे
उनका भी अरमान वन्दे मातरम्

रोटी, कपड़ा, शिक्षा सबको हो सुलभ
ऐसा ही अभियान वन्दे मातरम्

गंगा, यमुना दे सदाएं चारों ओर
हिन्द की मुस्कान वन्दे मातरम्

एकता में बल है, सब मिल कर कहें
है यही ईमान वन्दे मातरम्

है यही आराधना और साधना
देश गौरव गान वन्दे मातरम्

इकराम हुसैन 'शाद'

जन्मतिथि : 05 जनवरी, 1975

भागलपुर, बिहार-813113

मोबाइल 840 972 7507

1

है सुशोभित गीत भारत भाल वन्दे मातरम्
गा रहा है देश का हर लाल वन्दे मातरम्

वीरता, बलिदान, हिन्दुस्तान के परिवेश का
गर्व से गौरव समुच्चय गा रहा है देश का
हमको प्यारा क्यों न हो हर हाल वन्दे मातरम्
गा रहा है देश का हर लाल वन्दे मातरम्

सभ्यता, आतिथ्य और सत्कार की अवधारणा
ज्ञान के सूरज से नित प्रदीप्त होती हर दिशा
प्रेम, भक्ति, त्याग का सुर-ताल वन्दे मातरम्
गा रहा है देश का हर लाल वन्दे मातरम्

सबको मनमोहक, सुहावन हमसे ही तो आस है
सारे जग में सबसे सुन्दर साधना सन्यास है
है ये भारतवासियों की ढाल वन्दे मातरम्
गा रहा है देश का हर लाल वन्दे मातरम्

आस्था के मेल से हैं सर्वशक्तिमान हम
रंग-बिरंगे फूल से महके हुए उद्यान हम
हो रहा यश गान सालो-साल वन्दे मातरम्
गा रहा है देश का हर लाल वन्दे मातरम्

2

वतन की आन-बान सबकी शान वन्दे मातरम्
करें ख़ुशी-ख़ुशी न क्यों बखान वन्दे मातरम्

रगों में फूंक दे उमंग अपने शब्द बाण से
कि शत्रुओं का वक्ष रण में चीर दे यह तान से
लबों पे प्रहरी के है अब कमान वन्दे मातरम्
वतन की आन-बान सबकी शान वन्दे मातरम्

दिलों में एकता का रंग मिले तो फिर विहान हो
हरेक जान क़ीमती, हर आदमी समान हो
रचे न भेद-भाव का विधान वन्दे मातरम्
वतन की आन-बान सबकी शान वन्दे मातरम्

सुगंध है, सुहास है, मधुर सुभाषिनी छटा
धरा से ले के है गगन जहान पुरूषार्थ का
ऋषि-मुनि मनुज का यह है गान वन्दे मातरम्
वतन की आन-बान सबकी शान वन्दे मातरम्

मिले जो सुर से सुर तो फिर यह बेड़ियों को तोड़ दे
बिना खड़ग ही शत्रुओं को पल में यह निचोड़ दे
उड़ाए दुश्मनों के होश प्राण वन्दे मातरम्
वतन की आन-बान सबकी शान वन्दे मातरम्

3

डाला है दिल पे ऐसा असर वन्दे मातरम्
नस-नस में भर दिया है शरर वन्दे मातरम्

ग़ुस्सा चमन का इतना ही ज़्यादा उबल पड़ा
घर छोड़ के सड़क पे ही भारत निकल पड़ा
गाने लगा हरेक बशर वन्दे मातरम्
नस-नस में भर दिया है शरर वन्दे मातरम्

राजा कि रंक, मुल्ला, पुजारी हो कि इमाम
अंग्रेज़ के ख़िलाफ़ इकट्ठा हुए तमाम
थर्राया गूंज सुन के नगर वन्दे मातरम्
नस-नस में भर दिया है शरर वन्दे मातरम्

हुंकार इंक़लाब का सैलाब की तरह
दुश्मन के पहुँची कान में अंगार की तरह
जब सुर में गाते आए नज़र वन्दे मातरम्
नस-नस में भर दिया है शरर वन्दे मातरम्

दरिया, पहाड़ देने लगे झुक के रास्ता
जिस ओर क्रांतिकारी बढ़े धुंध मिट गया
अंग्रेज़ छोड़ भागा है घर वन्दे मातरम्
नस-नस में भर दिया है शरर वन्दे मातरम्

ऋषिपाल धीमान 'ऋषि'

जन्मतिथि 5 जुलाई, 1957

अहमदाबाद 382424

मोबाइल 942 833 0490

1

शक्ति का संचार वन्दे मातरम्
भावना का ज्वार वन्दे मातरम्

देके बंकिमचंद्र भारत को गए
क्रांति का आधार वन्दे मातरम्

देशद्रोही काँपेंगे, तू हाथ उठा
ज़ोर से उच्चार वन्दे मातरम्

यह नहीं नारा न यह उद्घोष है
है ये जीवन-सार वन्दे मातरम्

देश से है प्रेम तो भर ज़ोर से
सिंह की हुंकार वन्दे मातरम्

हँस के सूली चढ़ गए माँ के सपूत
बोलकर इक बार वन्दे मातरम्

लाड़ला बनना है भारतमाँ का तो
प्रेम से स्वीकार 'वन्दे मातरम्'

2

बंकिम ने एक बार लिखा वन्दे मातरम्
दुनिया ने बार-बार पढ़ा वन्दे मातरम्

माना कि राष्ट्र-गान न यह बन सका मगर
हर दिल में देवता-सा पुजा वन्दे मातरम्

आनंदमठ के वक़्त से वीरों के रक्त में
बलिदानी रंग बन के बहा वन्दे मातरम्

यों इसकी उम्र हो गई है डेढ़ सौ बरस
लेकिन है आज तक भी युवा वन्दे मातरम्

हर ओर देशप्रेम की खुशबू बिखर गई
जब एक क्रांति-पुष्प खिला वन्दे मातरम्

संन्यासियों ने शस्त्र उठाए थे जिस घड़ी
वातावरण में गूंज उठा वन्दे मातरम्

सबसे पवित्र घोष की जब बात चल पड़ी
फौरन हरेक बोल उठा वन्दे मातरम्

कविता विकास

जन्मतिथि-28 फरवरी
सेक्टर 121, नोयडा-201301 यूपी
मोबाइल–943 132 0288

1

आह्वान वन्दे मातरम्
अरमान वन्दे मातरम्

गाथा वतन की इसमे है
इक गान वन्दे मातरम्

माँ भारती को है नमन
दिल जान वन्दे मातरम्

गौरव वतन की जिससे वह
अभिमान वन्दे मातरम्

अपनी कला-संस्कृति की है
पहचान वन्दे मातरम्

है देश सुंदर गीत इक
उन्वान वन्दे मातरम्

आवाज़ इसमें जीत की
अभियान वन्दे मातरम्

2

दिल से दिल को जोड़ने का तार वन्दे मातरम्
प्रेम की गंगा से निकली धार वन्दे मातरम्

है हमारी ज़िंदगी का सार वन्दे मातरम्
और भारतवासियों का प्यार वन्दे मातरम्

हौसला है और उम्मीदों का इक दीपक भी है
धूप में बारिश का ज्यूँ आसार वन्दे मातरम्

गीत माला में पिरोया देश का वंदन यही
जीने का है आचरण-व्यवहार वन्दे मातरम्

हम तभी हैं जब वतन है, याद रखना है हमें
है करोड़ों लोगों का आभार वन्दे मातरम्

मार्गदर्शक गीत ये जो सबकी आँखें खोल दे
कर रहा सपनों को है साकार वन्दे मातरम्

फूल पत्ते चांद तारे घन गगन पर्वत हवा
जैसे कुदरत का हो इक संसार वन्दे मातरम्

कालजयी घनश्याम

जन्मतिथि : 01 जुलाई, 1964
नई दिल्ली-110 086
मोबाइल : 981 013 7967

1

देश के युवकों की है मुस्कान वन्दे मातरम्
एकता का मंत्र है ये गान वन्दे मातरम्

देश ने जब भी पुकारा लोग सारे आ गए
हो गया जयघोष कर के ध्यान वन्दे मातरम्

चूम कर फाँसी का फँदा हँसते-हँसते दोस्तो
सूलियों पर भी किया शुभ गान वन्दे मातरम्

देश से अंग्रेजों को बाहर भगाने के लिए
बोल उठा था सारा हिंदुस्तान वन्दे मातरम्

सैनिकों में फूँक देता जान है रण क्षेत्र में
देश के जाँबाजों की है जान वन्दे मातरम्

गीत, कविता ये नहीं, है प्राण अपने देश की
नौजवानों का तो है उत्थान वन्दे मातरम्

है नमन 'घनश्याम' भारत भूमि को कर जोड़ कर
स्वस्थ भारत की है ये पहचान वन्दे मातरम्

कुमार पंकजेश

जन्मतिथि-16 जूम, 1963

पटना-800020

मोबाइल-878 938 7721

1

ऐ माँ भारत तुझको वन्दे मातरम्,
शत नमन शत तुझको वन्दे मातरम्,

भूमि का रज रोली चंदन की तरह,
भक्ति में रत तुझको वन्दे मातरम्,

धर्म-मज़हब जात सब कुछ सच मगर,
देश तत्सत तुझको वन्दे मातरम्,

देवताओं की है धरती ये मेरी,
ज्ञान संगत तुझको वन्दे मातरम्,

है हृदय भारत ही पूरे विश्व का,
सब हैं सम्मत तुझको वन्दे मातरम्,

हम सनातन हैं सनातन ही रहें,
है ये जनमत तुझको वन्दे मातरम्,

बाल भी बांका न होगा अब कभी,
लेते हैं व्रत तुझको वन्दे मातरम्,

2

रक्त की हर बूँद तेरे नाम वन्दे मातरम्,
आएगा हर कण बदन का काम वन्दे मातरम्,

मेरा भारत चल पड़ा है विश्व के नेतृत्व को,
और हत उत्साह हैं ये वाम वन्दे मातरम्,

विश्व में होंगी कई सुंदर से भी सुंदर जगह,
पर मुझे है देश मेरा धाम वन्दे मातरम्,

हर दिशा गुंजित है हरदम शुभ भजन के गान से,
हो रही पावन ये सुबह-शाम वन्दे मातरम्,

स्वाभिमानी हैं बहुत भारत तेरे सब नागरिक,
है नहीं कोई प्रगति में जाम वन्दे मातरम्,

आँच अपने देश पर आने न देंगे हम कभी,
याद रक्खें शत्रु फिर परिणाम वन्दे मातरम्,

क्यों नमन मैं ना करूँ है ये धरा ही पावनी,
इस धरा पर आये हैं श्रीराम वन्दे मातरम्,

चाँद मुंगेरी

जन्मतिथि-11मई, 1950

बोकारो-827001झारखंड

मोबाइल 9204093040

1

जिधर देखो उधर था एक ही जयकार वन्दे मातरम्
चतुर्दिक गूंजता था मात्र ये हुँकार वन्दे मातरम्

पड़ी थी पाँव में ज़ंज़ीर जो, उसको हटाने के लिये-
किये हृदय से मिल-जुल कर सभी स्वीकार वन्दे मातरम्

हमारी सोच पर अंकुश किये बैठी थी जो फ़ितनागरी
उसी चट्टान से भिड़ने बना आधार वन्दे मातरम्

निरंतर काल बनके भेड़िया जो गाँव में आते रहे
यही था स्वप्न, वो भागे, किया साकार वन्दे मातरम्

मिलाकर हाथ हाथों से बने फ़ौलाद से मिल जुल सभी
बढ़ा साहस तभी जब गा उठे एकबार वन्दे मातरम्

यहाँ घनघोर अत्याचार जब जनपद में भी बढ़ने लगा
उठा गाण्डीव फ़िर रण की बनी टंकार वन्दे मातरम्

घटा घनघोर को जब चीर डाला तब यहाँ पहुँची किरण
बना अब 'चाँद' सबके वास्ते त्योहार वन्दे मातरम्।

2

है समर्पित राष्ट्र को यह गान वन्दे मातरम्
विश्व में अपना बढ़ाता मान वन्दे मातरम्

गान यह केवल नहीं, यह युद्ध का उदघोष है
जंग भीषण थी किया आसान वन्दे मातरम्

मान-प्रतिष्ठा बचाने देश की, गर दोगे प्राण
जग करेगा दिल से गा, सम्मान वन्दे मातरम्

गीत है यह एकता का गा रहे मिल-जुल सभी
कब करे किसका यहाँ अपमान वन्दे मातरम्

सूत्र है यह प्रेम का समझो न इसको नफ़रती
क्यों समझ पाते नहीं नादान वन्दे मातरम्

हो मुसलमॉ याकि हिन्दू दिल से अपनाएं इसे
धर्म है ईमान “मेरी जान वन्दे मातरम्”

पूछता था कौन कल-तक इस गली में क्या कहें
“चाँद” को अर्पित किए पहचान वन्दे मातरम्।।

ज़ाहिद अबरोल

जन्मतिथि-20 दिसम्बर, 1950

ऊना-174303; हिमाचल प्रदेश

मोबाइल 981 664 3939

1

धुन दुनिया में सब से प्यारी, वन्दे मातरम्
गीत यह सब गीतों पर भारी, वन्दे मातरम्

क़ौमपरस्ती की चिन्गारी, वन्दे मातरम्
आन बान और शान हमारी, वन्दे मातरम्

मक़तल में जब डटे जुझारू, सीना तान के
ख़ून की इक इक बूँद पुकारी, वन्दे मातरम्

क़ौम को दे इक अज़्मे-मुसम्मम रसनो-दार का
दुश्मन को दे डर, बेज़ारी, वन्दे मातरम्

'बिस्मिल' और 'आज़ाद', भगत सिंह, सब के लब पे था
गीत यह प्यारा, धुन यह प्यारी, वन्दे मातरम्

'अशफ़ाक़ुल्लाह' और 'सुभाष' के दिल में, ज़िह्न में
इस जयघोष की गूँज थी तारी, वन्दे मातरम्

मुर्दों में जाँ फूँक के उन को भेजे जंग में
अज़्मे-शहादत की चिन्गारी, वन्दे मातरम्

क़ौम का रहबर, क़ौम का हाफ़िज़, सब का पास्बाँ
इस पे क़ुर्बां जान हमारी, वन्दे-मातरम्

ज्योति मिश्रा

जन्मतिथि 7 जुलाई
चिरैयाटांड़, पटना-800001
मोबाइल–950 455 7272

1

शौर्य ऊर्जा त्याग का संगीत वन्दे मातरम्
एक स्वर में साथ गाएँ गीत वन्दे मातरम्।

गीत वन्दे मातरम् से मातृ भू तुझको नमन,
अंक में जिसके अपरिमित सम्पदा सुख धन रतन
इस धरा की है सुहावन रीत वन्दे मातरम्
एक स्वर में साथ गाएँ गीत वन्दे मातरम्...।

राष्ट्र निष्ठा में समर्पित लोक की है चेतना,
भारती माँ की हरे ये गीत सारी वेदना।
हो गए सुन शत्रु भी भयभीत वन्दे मातरम्।।
एक स्वर में साथ गाएँ गीत वन्दे मातरम्..!

देश का गौरव अमर इतिहास की जयकार है,
गीत यह हर देशवासी के हृदय का प्यार है
लोक मानस से बढ़ाए प्रीत वन्दे मातरम्
एक स्वर में साथ गाएँ गीत वन्दे मातरम्

छोड़ कर हर रंग हम पर भारती का रंग हो
हैं किले घातक यहां सब पातकी के भंग हों
गर्व से गाएँ हृदय ले जीत वन्दे मातरम्
एक स्वर में साथ गाएँ गीत वन्दे मातरम्..!

बोल वन्दे मातरम् के देश की हुंकार है
अस्मिता पर देश की यदि वार तो फिर वार है
धमनियों में बह रहा संगीत वन्दे मातरम्
एक स्वर में साथ गाएँ गीत वन्दे मातरम्..!

ये सकल भारत सफल भारत का अनहद नाद है
मन की वीणा से जुड़ा संगीतमय संवाद है
छोड़ कर अभिमान गाओ मीत वन्दे मातरम्
एक स्वर में साथ गाएँ गीत वन्दे मातरम्..!

ज्वाला सांध्यपुष्प

जन्मतिथि: 5 मार्च, 1955

पटोरी, समस्तीपुर-848504

मोबाइल 926 275 7523

1

दशकों से करते आ रहे जयकार वन्दे मातरम्।
अब राष्ट्रहित में ही करें व्यापार वन्दे मातरम्।

झुकने न पाए यह तिरंगा अब कभी भी साथियो
रक्षार्थ इसके मृत्यु भी स्वीकार वन्दे मातरम्।

हैं हम सभी भाई बराबर, छोटा कोई है कहां
बस है यही संबंधों का सत्कार, वन्दे मातरम्।

घुसने न देंगे शत्रुओं को आज सरहद पार से
सबके लिए ब्रह्मोस भी तैयार वन्दे मातरम्।

अब देख पाता है कहाँ शत्रु कोई आँखें उठा
बस देख ताक़त होता है लाचार वन्दे मातरम्।

हम पूजते पत्थर, नदी, सागर को देवों की तरह
मिलजुल के चलता सारा कारोबार वन्दे मातरम्।

मंदिर कहीं गुरुद्वारे हैं तो चर्च, मस्ज़िद भी कहीं
रिश्तों के रंगों में रंगा घर-द्वार, वन्दे मातरम्।

2

यह तिरंगा देश की शान वन्दे मातरम्।
इस ध्वजा पर है बलि जान वन्दे मातरम्।

रह न पाए आततायी इधर छुपकर कहीं
चल रहा ऐसा ही अभियान वन्दे मातरम्।

खून बहने को है तैयार सरहद पर अभी
शत्रु की कर ली है पहचान वन्दे मातरम्।

बाज आ जाओ अरे पाक ताको मत इधर
हम खड़े हैं अब सीना तान वन्दे मातरम्।

शत्रु की सरहद में घुस बम गिराने को अभी
हैं तरसते देश के अरमान वन्दे मातरम्।

खाए होंगे कितनी क़समें यहां हमने सभी
फिर घुसे कैसे ये शैतान वन्दे मातरम्।

त्याग जीवन लघु हमें जाना ही है एक दिन
देश हित में देंगे बलिदान वन्दे मातरम्।

डॉ. अर्चना गुप्ता
जन्मतिथि-15 जून 1965
मुरादाबाद 244001
मोबाइल : 945 603 2268

1

भावनाओं का करे संचार वन्दे मातरम्
है हमारा देश के प्रति प्यार वन्दे मातरम्

संस्कारों संस्कृति के मंत्र का ये मूल है
देश के सम्मान का आधार वन्दे मातरम्

ये पिरोता देश को है एकता के सूत्र में
है सनातन धर्म का विस्तार वन्दे मातरम्

भाल पर माटी लगाकर वीर करते हैं नमन
भारतीयों का हृदय उद्गार वन्दे मातरम्

शान से लहरा रहा अपना तिरंगा इस तरह
गा रहा है अब सकल संसार वन्दे मातरम्

गूँज उठती हैं दिशाएँ झूम जाती है धरा
जब बहाता है सुरों की धार वन्दे मातरम्

'अर्चना' का भाव ये सद्भावना का गीत है
जोड़ता है दिल से दिल के तार वन्दे मातरम्

2

देश की पहचान वन्दे मातरम्
एकता की तान वन्दे मातरम्

एक स्वर में लाखों स्वर हैं गूँजते
शक्ति का व्याख्यान वन्दे मातरम्

है समर्पित गीत पूर् देश को
भारती का मान वन्दे मातरम्

जोश रग-रग में हमारी ये भरे
वीर का अवदान वन्दे मातरम्

पावनी गंगा हिमालय की धरा
सबका है वरदान वन्दे मातरम्

यह मिटा देता दिलों की नफ़रतें
प्रेम का गुणगान वन्दे मातरम्

इसके इक-इक शब्द में है 'अर्चना'
राष्ट्र का यशगान वन्दे मातरम्

डॉ. आनन्द किशोर

जन्मतिथि : 4 दिसम्बर, 1962
दिल्ली-110053
मोबाइल-8920747891

1

है तिरंगा सच में अपनी शान वन्दे मातरम्।
ये हमारी जग में है पहचान वन्दे मातरम्।

दे रही माटी हमें है अन्न खाने के लिए,
देश की माटी का है वरदान वन्दे मातरम्।

मिल रहा मौक़ा सभी को हर तरक़्क़ी के लिए,
हर निवासी को मिला सम्मान वन्दे मातरम्।

हम अहिंसा, प्रेम का संदेश सबको दे रहे,
रोज़ अपना बढ़ रहा है मान वन्दे मातरम्।

योग की और ध्यान की धरती हमारी, गर्व है,
विश्वभर को दे रहे हम ज्ञान वन्दे मातरम्।

दोस्त जो दुनिया में अपने, दोस्ती के नाम पर,
हम सभी को बाँटते मुस्कान वन्दे मातरम्।

दौर-ए-हाज़िर में कोई 'आनन्द' सारे विश्व में,
देश से अपने नहीं अन्जान वन्दे मातरम्।

2

है वतन से प्यार वन्दे मातरम्।
जां भी देंगे वार वन्दे मातरम्।

हर सुरक्षा सरहदों को दे रहे,
हैं जवां जी-दार वन्दे मातरम्।

हम सभी पहनाएंगे इस देश को,
एकता का हार वन्दे मातरम्।

सोएगा भूखा न कोई, अन्न पर,
सबका है अधिकार वन्दे मातरम्।

ध्यान रखती हर निवासी का यहाँ,
देश की सरकार वन्दे मातरम्।

आन में और शान में इस देश की,
गाएंगे हर बार वन्दे मातरम्।

फूल होंगे हर तरफ़ 'आनन्द' अब,
मिट रहेंगे ख़ार वन्दे मातरम्।

डॉ. कनक लता तिवारी

जन्मतिथि-6 जून.1958

कपरखैराने नवी मुंबई 400709

मोबाइल 908 216 9504

1

जहाँ में है वतन मेरा महान वन्दे मातरम्
बना हुआ है भारती की शान वन्दे मातरम्

नहीं यहाँ पे भेदभाव जाति-पाति धर्म का
सभी है माँ की दृष्टि में समान वन्दे मातरम्

सभी हैं बोलते यहाँ तरह-तरह की बोलियाँ
मगर यहाँ पे मीठी हर ज़ुबान वन्दे मातरम्

हैं तीन रंग मिल रहे तिरंगे के लिए यहाँ
है चौथा रंग चक्र का निशान वन्दे मातरम्

'कनक' ये देश का बढ़ाए मान इस तरह सदा
कि देश का ये गर्व आन बान वन्दे मातरम्

डॉ. कृष्णकुमार 'नाज़'
जन्मतिथि-10 जनवरी, 1961
मुरादाबाद-244105
मोबाइल : 992 737 6877

1

आन वन्दे मातरम् है, शान वन्दे मातरम्
गर्व से कहता है हिंदुस्तान वन्दे मातरम्

प्यार है जिनको बहुत धरती से भारतवर्ष की
उन सभी होंठों पे है जयगान वन्दे मातरम्

देश की ख़ातिर न जाने कितने ही रणबाँकुरे
गाते-गाते हो गए बलिदान वन्दे मातरम्

धन्य हैं वंकिम चटर्जी, धन्य है आनंदमठ
मिल गया जिनसे हमें वरदान वन्दे मातरम्

भयरहित हैं शब्द जिनके, सत्य के जो हैं निकट
है उन्हीं की इक मधुर मुस्कान वन्दे मातरम्

सबसे पहले देश है, है बाद उसके और कुछ
बाइबिल, गीता हो या क़ुरआन, वन्दे मातरम्

बिन छुए ही बज उठीं फिर घंटियाँ मंदिर की 'नाज़'
भारती का जब हुआ यशगान वन्दे मातरम्

डॉ. नरेन्द्र कुमार सिंह 'त्यागी'

जन्मतिथि-21 जनवरी, 1955

समस्तीपुर

मोबाइल 911 357 4997

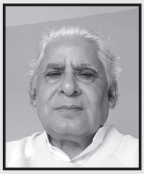

1

है गीत भारत देश का यह शान वन्दे मातरम्।
गाते हुए होता हमें अभिमान वन्दे मातरम्।

है प्रेम जिसको देश से वह जान भी देता लुटा
कहते खुशी से ये सभी इंसान वन्दे मातरम्।

यारों दिलेरी चाहिए हो हौसला पुरज़ोर भी
नारा लगाना है नहीं आसान वन्दे मातरम्।

इस गीत में केवल क़सीदे हैं वतन की शान के
यह गीत मुर्दों में भी फूंके जान वन्दे मातरम्।

इस देश में जयचंद जैसे लोग भी हैं दोस्तो
जो दिल से गा सकते नहीं यह गान वन्दे मातरम्।

कुछ लोग जो देते नहीं हैं अहमियत इस गीत को,
उनके लबों पर लाना है मुस्कान वन्दे मातरम्

'त्यागी' गुज़ारिश कर रहा हर नागरिक से नित यही
हरदम करें इस मंत्र का गुणगान वन्दे मातरम्।

डॉ. पुष्प कुमार राय

जन्मतिथि-18 जनवरी, 1976
बांका, भागलपुर 813207
मोबाइल-626 053 528?

1

देश का अभिमान सबका मीत, वन्दे मातरम्।
आ सभी मिल गुनगुनाएं गीत, वन्दे मातरम्।।

छोड़ वैरी, नफरतों को, रोज बांटें प्यार हम।
राह उलफ़त की सिखाती रीत, वन्दे मातरम्।।

शांति का संदेश देता अनवरत ये देश को।
गैर को करते नहीं भयभीत, वन्दे मातरम्।।

एकता की शक्ति से यह देश आगे बढ़ रहा।
नफ़रती सी हरकतों पर जीत, वन्दे मातरम्।।

दुश्मनों की तोप आगे तुम खड़ी रहती निडर।
मां तुझे अर्पित सदा नवनीत, वन्दे मातरम्।।

जाति पाती का न बंधन है न कोई दानवी।
देश के हर वासियों की प्रीत, वन्दे मातरम्।।

चांदनी से शोभती हो नित नई रातें जहां।
शस्य श्यामा इस धरा पर पीत, वन्दे मातरम्।।

डॉ. पूनम सिन्हा 'श्रेयसी'

जन्मतिथि : 5 सितंबर

पटना-800001

मो० 834 048 4896

1

हर साँस में जय घोष की हुंकार वन्दे मातरम्,
इस देश के प्रति प्रेम का आधार वन्दे मातरम्।

थे वीर सब जो देश-हित में मर मिटे हँसते हुए,
निकला सभी के मुख से अंतिम बार वन्दे मातरम्।

धारण किया केसर-तिलक माथे पे माँ के नाम का,
है देश के हर व्यक्ति का सत्कार वन्दे मातरम्।

जिसकी धरा पर जन्म लेकर हम सभी आगे बढ़े,
उस देश को कहते हैं बारम्बार वन्दे मातरम्।

चाहे मिटे ये प्राण भी लेकिन सुरक्षित देश हो,
कहते हैं लेकर हाथ में तलवार वन्दे मातरम्।

हर शब्द में हर भाव में अभिव्यक्ति में सम्मान में,
रहता है सारे देश का उद्गार वन्दे मातरम्।

बच्चे बड़े-बूढ़े युवा स्त्री-पुरुष हर वर्ग ने,
गुंजित किया आजन्म जयजयकार वन्दे मातरम्।

2

है देश की महानता का गान वन्दे मातरम्।
ये देशप्रेम की मधुर है तान वन्दे मातरम्।

हताश हो निराश हो उदास हो न मन कभी,
बुझे हुए हृदय का है निदान वन्दे मातरम्।

हो शूरवीर तुम निडर झुके कभी नहीं ये सर,
है वीरता के भाव का वितान वन्दे मातरम्।

ये गीत ओजपूर्ण है तो गा रहे हैं शान से,
हमीं नहीं ये धरती आसमान वन्दे मातरम्।

हैं कह रहे तेरे ये लाड़ले विनीत भाव से,
कि मातृभूमि है ये तेरी शान वन्दे मातरम्।

ये मात्र गीत ही नहीं ये अस्त्र भी है शस्त्र भी,
करे ये शत्रु को लहूलुहान वन्दे मातरम्।

इसे जपें इसे सुनें ये वीरता का मंत्र है,
है देश प्रेम का सरस विधान वन्दे मातरम्।

डॉ. (महाकवि) प्रेमानंद सरस्वती

जन्मतिथि 2 अगस्त 1969

इंदौर, मध्य प्रदेश 452003

मोबाइल नंबर 932 907 8390

1

माँ भारती का मस्तक मुकुट तिलक चंदन है वन्दे मातरम्।
माँ भारती का नंदन वंदन अभिनंदन है वन्दे मातरम्।।

रग रग में बहती लहू की बूंद का स्पंदन है वन्दे मातरम्।
मतवाले वीर बलिदानियों का अवगुंठन है वन्दे मातरम्।।

देशभक्तों की देशभक्ति का रंजन कुंदन है वन्दे मातरम्।
नादब्रह्म जयघोष स्वतंत्रता का गुंजन है वन्दे मातरम्।।

बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय का भावभंजन है वन्दे मातरम्।
वीरों का कंचन था कंचन रहेगा कंचन है वन्दे मातरम्।।

हिंदुस्तान और हिंदुस्तानियों का वंदन है वन्दे मातरम्।
वीरों के प्राणों की आहुतियाँ का आलिंगन है वन्दे मातरम्।।

एकता सद्भावना संघर्ष और चिंतन है वन्दे मातरम्।
सारे देशभक्त हिंदुस्तानियों का अवलंबन है वन्दे मातरम्।।

जो माँ भारती के क़दमों का चूमा वो चुंबन है वन्दे मातरम्।
ये गजल प्रेमानंद के प्रेम का मूल्यांकन है वन्दे मातरम्।।

2

लिखा बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय ने राष्ट्रगीत वन्दे मातरम्।
गाया देशभक्त पत्थर उपाख्याय ने राष्ट्रगीत वन्दे मातरम्।।

भारत भारतमाता की आत्मा में है परमात्मा दिव्यात्मा।
पुस्तक का नहीं मात्र एक अध्याय हे राष्ट्रगीत वन्दे मातरम्।।

हैं क्रांतिकारी बलिदानियों की अमर गाथा का दिव्यामृताधार।
स्वाकार का स्वाधार स्वाध्याय हे राष्ट्रगीत वन्दे मातरम्।।

देशराग देशनाद ऐश्वर्य वैभव देश की गाथाकाल का।
वो सारतत्व महामुखोपाध्याय हे राष्ट्रगीत वन्दे मातरम्।।

धरती अंबर पाताल ताल त्रिताल झपताल एकताल का।
स्थायी अंतरा स्वतंत्रताध्याय हे राष्ट्रगीत वन्दे मातरम्।।

थाती भारतमाता की पाती भारतमाता की सिद्धिदात्री से धात्री।
अष्टसिद्धि नवनिधि महाध्याय हे राष्ट्रगीत वन्दे मातरम्।।

स्वर्ग जननी जन्मभूमि मातृभूमिश्च चारोंधाम आठोयाम।
पाया प्रेमानंद प्रथमाख्याय ये राष्ट्रगीत वन्दे मातरम्।।

डॉ. ब्रह्मजीत गौतम

जन्मतिथि-28 अक्टूबर, 1940

ग़ाज़ियाबाद 201016

मोबाइल-976 000 7838

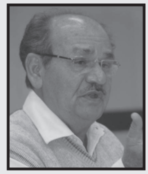

1

जब भी सुनते हैं हमारे कान वन्दे मातरम्
जोश भर देता है मन में गान वन्दे मातरम्

था यही नारा, लगाते थे जिसे रण-बाँकुरे
बन गया आज़ादी की पहचान वन्दे मातरम्

है ये भारतभूमि माँ से भी अधिक प्यारी हमें
है कराता इसका अमृतपान वन्दे मातरम्

सुन के वन्दे मातरम् गोरे रफ़ूचक्कर हुए
है हमारा दिल, हमारी जान वन्दे मातरम्

है न केवल प्रार्थना, यशगान भारत-भूमि का
वस्तुत: इस देश की है शान वन्दे वन्दे मातरम्

धूप में घर से न निकला एक पल भी जो कभी
उसको भी कर देता है गतिमान वन्दे मातरम्

प्यार के बूटे खिलेंगे नफ़रतों क़ी शाख पर
'जीत' यह है प्यार का प्रतिमान वन्दे मातरम्

2

पत्ते, फूल सभी हैं गाते वन्दे मातरम्
पशु-पक्षी भी तान सुनाते वन्दे मातरम्

बच्चे, बूढ़े, नौजवान मस्ती में झूमते
गा-गाकर झंडा फहराते वन्दे मातरम्

जाति-धर्म-मज़हब की दीवारों को तोड़कर
सुख में, दुख में मिलकर गाते वन्दे मातरम्

नवयुवकों में देश-प्रेम का जज़्बा देखिये
बच्चे-बच्चे को सिखलाते वन्दे मातरम्

हे गणतंत्र दिवस तुमको यों आता देखकर
तन, मन से स्वर बाहर आते वन्दे मातरम्

उनके देशप्रेम पर आखिर क्यों विश्वास हो
कहने में भी जो सकुचाते वन्दे मातरम्

'जीत' मृत्युकी चिंता उन वीरों को किसलिए
जो सरहद पर गाते जाते वन्दे मातरम्

डॉ. मेहता नगेन्द्र सिंह

जन्मतिथि 22 जुलाई 1940
राजेन्द्र नगर, पटना
मोबाइल 886 304 5716

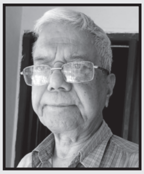

1

सबका है अभिमान वन्दे मातरम्
देश की यह शान वन्दे मातरम्

गीत का हर बोल है जादू भरा
जिसमें फ़ूंके जान वन्दे मातरम्

गुनगुनाते पेड़, पर्वत और नदी
है खिला गुलदान वन्दे मातरम्

एकता, विश्वास से भरपूर यह
जैसे हो वरदान वन्दे मातरम्

है समय की तेज़ धारों पर खड़ा
पल्लवित गुणगान वन्दे मातरम्

मित्रता-बंधुत्व की सम्पूर्णता
विश्व की मुस्कान वन्दे मातरम्

क्यों न गाए झूम कर 'मेहता' इसे
स्नेह का संज्ञान वन्दे मातरम्

डॉ. विनोद प्रकाश गुप्ता 'शलभ'

जन्मतिथि:-17 अप्रैल 1949

गुरुग्राम-122101 : हरियाणा

मोबाइल +981 116 9069

1

खिलखिलाती धूप सा हो गान वन्दे मातरम्,
है वतन को ईश का वरदान वन्दे मातरम्।

तेरी ख़ुशबू पे किसी सरहद का बंधन क्यों रहे,
हर दिशा में हो तेरा गुंजान वन्दे मातरम्।

बाग़बाँ का पत्ता-पत्ता नाम से चमके तेरे,
हो हमारे भाल का अभिमान वन्दे मातरम्।

ये हमारी आस्था बल बुद्धि का प्रतिरूप है,
देश के जन-जन की हो पहचान वन्दे मातरम्।

इश्क़ हो अपनी धरा से ख़ूँ की अन्तिम बूँद तक,
ईश का वरदान हो, ईमान वन्दे मातरम्।

मुफ़लिसी के पक्ष में हरदम अडिग चट्टान सा,
जाति-धर्मों को मिले सम्मान वन्दे मातरम्।

इसकी रक्षा को 'शलभ' हर पल रहें प्रतिबद्ध सब,
बच्चा-बच्चा देश पर क़ुर्बान वन्दे मातरम्।

2

देश हित का सबको दे आधार वन्दे मातरम्,
दीन दुखियों की बने दस्तार वन्दे मातरम्।

बस दिखावे के लिए ना इसका इस्तेमाल हो,
हो तरक़्क़ी के लिए पतवार वन्दे मातरम्।

भूख उनकी भी मिटे जो शाश्वत भिक्षुक बने,
पहले-पहले उनका हो उद्धार वन्दे मातरम्।

तुलसी ओ रैदास सब मिलजुल रहें इस देश में,
हो सनातन का भी जयजयकार वन्दे मातरम्।

पंथों की नादानियाँ, धर्मान्धिता की नफ़रतें,
नाम पे इनके न हो संहार वन्दे मातरम्।

गान से 'बंकिम' के हमको प्रेरणा मिलती रहे,
एक मत से हम करें स्वीकार वन्दे मातरम्।

सारी दुनिया में बजे डंका तेरे उदघोष का,
"गीता" जैसा हो तेरा सत्कार वन्दे मातरम्।

डॉ. शिवओम अम्बर

जन्मतिथि-23 सितंबर, 1952
फर्रुखाबाद-209625
मोबाइल-941 533 3059

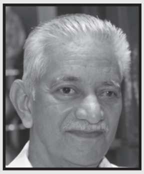

1

सांस्कृतिक चेतना का ज्वार वन्दे मातरम्,
सुंदरं सत्यं शिवम् का सार वन्दे मातरम्।

भारती की मांगलिक अभ्यर्चना में सम्मिलित
वाद्य-यंत्रों की मधुर झंकार वन्दे मातरम्।

शुक्ल पक्षी शब्द-स्वर के नीलिमा आकाश में,
एक बंकिम चंद्र का उपहार वन्दे मातरम्।

स्वस्ति मंत्रों की विभा से दीप्त वलयित तत्व को,
शक्ति शाली शांति का संचार वन्दे मातरम्।

वत्सला वरदा सहज सरला शुभा माँ के लिये,
इंद्रधनुषी उत्सवी उद्गार वन्दे मातरम्।

डॉ. संगीता नाथ 'संगीत'

जन्मतिथि-3 फ़रवरी, 1963

धनबाद, झारखण्ड

मोबाइल 943 116 8918

1

गर्व है संकल्प है अभिमान वन्दे मातरम,
जागरण नवचेतना सद्ज्ञान वन्दे मातरम्।

व्योम पर ब्रह्मांड के अंकित अमिट स्वर्णाक्षरी,
ध्रुव-चिरंतन दीप्त-शिख आख्यान वन्दे मातरम्।

अभ्युदय अविरत अखंडित राष्ट्र की आराधना,
रणविजय उद्घोष अनहद तान वन्दे मातरम्।

वंदना सह अर्चना माँ भारती की साधना,
साध्य लक्षित क्रांति का आह्वान वन्दे मातरम्।

मंत्र यह विश्वास का यह शौर्य की अभिव्यंजना,
जोश उर्जा ओज का संधान वन्दे मातरम्।

सभ्यता सम-उज्ज्वला अस्तित्व की है अस्मिता,
राष्ट्र के अमरत्व का अवदान वन्दे मातरम्।

ज्योत्सना इतिहास की ऐश्वर्य समकालिक यही,
देश की थाती अमर शुभ गान वन्दे मातरम्।

डॉ. सीमा विजयवर्गीय

जन्मतिथि-3 नवंबर, 1972

अलवर, राजस्थान 301001

मोबाइल 707 371 3013

1

जग में हिंदुस्तान का सम्मान वन्दे मातरम्
इस धरा की यशकथा, यशगान वन्दे मातरम्

रूपसी - सुखदायनी - मृदुभाषिनी - वरदायिनी
भारती की इक सुरीली तान वन्दे मातरम्

मंत्र ऐसा जिसने वीरों का बढ़ाया हौसला
देश की आज़ादी की पहचान वन्दे मातरम्

स्वर्ग से बढ़कर है माटी जिसकी रज में हम पले
है उसी माँ भारती का गान वन्दे मातरम्

है उपज उस लेखनी की वीरता से जो भरी
लेखनी का भी हुआ सम्मान वन्दे मातरम्

ओ युवा पीढ़ी पुनः इस देश की गाथा सुनो
जान लो है राष्ट्र का अभिमान वन्दे मातरम्

भूल जाना तुम नही इस मान को, सम्मान को
याद रखना देश का प्रतिमान वन्दे मातरम्

डॉ. (प्रो.) सुधा सिन्हा

जन्मतिथि-16 फरवरी

बुद्धा कालोनी, पटना-8000001

मोबाइल-834 078 5305

1

कहने में आसान वन्दे मातरम्
देश की पहचान वन्दे मातरम्

माँ की पूजा भक्ति है सबसे बड़ी
बोलना है शान वन्दे मातरम्

चीन पाकिस्तान से क्यों डर भला
सुन के सब हैरान वन्दे मातरम्

हम जिए अहले-वतन तेरे लिए
तुझ पे जां क़ुर्बान वन्दे मातरम्

दुश्मनों में ख़ौफ़ है इस गीत से
कह के लेते जान वन्दे मातरम्

गाइए मस्ती में दिल से झूमकर
गाने में सम्मान वन्दे मातरम्

गांठ मन में बांध लो अपने 'सुधा'
देश का यश गान वन्दे मातरम्

डॉ. सुनीता सिंह 'सुधा'

जन्मतिथि-9 फ़रवरी, 1978

वाराणसी

मोबाइल 967 161 9238

1

भारत के जनमन का है प्यारा गान वन्दे मातरम्
है विश्व में इसकी अलग पहचान वन्दे मातरम्

हर दिन सहर से शाम गाएंगे सभी मिलकर यहाँ
हम आज से करते यही ऐलान वन्दे मातरम्

तुझसे जुडी गहरी सभी की आस्था विश्वास है
तू शक्ति है तू भक्ति तू सम्मान वन्दे मातरम्

जाते शहीदों ने कहा सँम्भालो अब इस देश को
है दास्तां से मुक्ति का वरदान वन्दे मातरम्

अब तो शहीदों का करो गुणगान हिंद निवासियों
इस गान से ही देश की है शान वन्दे मातरम्

नित गा रहे सब मुक्त कंठों से मधुर इक गान यह
हर भारती के हित बना बना पहचान वन्दे मातरम्

भारत की धरती करती है कल्याण सब का जय कहो
घर घर में सब दिन हो रहा जयगान वन्दे मातरम्

दिनेश सिंदल

जन्मतिथि-11 मई, 1956,
जोधपुर, राजस्थान-342008
मोबाइल–774 294 4505

1

आओ मिलकर गाएं वन्दे मातरम्
दुनिया को सिखलाएं वन्दे मातरम्

जिसको आप तिरंगा कहते आए हैं
छत पर हम फहराएं वन्दे मातरम्

कितना ऊंचा विश्वगुरु का आसन है
उतना ऊंचा जाएं वन्दे मातरम्

नफ़रत की बोली ना बोलें आपस में
प्रेम-प्रीत फैलाएं वन्दे मातरम्

हिंदू, मुस्लिम, सिख, पारसी, ईसाई
सबको साथ बिठाएं वन्दे मातरम्

राष्ट्र-प्रेम से महके भारत वर्ष मेरा
दिल में फूल खिलाएं वन्दे मातरम्

भारत माता की जय बोलें सब मिलकर
सब मिलकर के गाएं वन्दे मातरम्

2

बादल ने बरसाया वन्दे मातरम्
तब धरती ने गाया वन्दे मातरम्

नदियों के कलकल में कोयल के स्वर में
फूलों में मुस्काया वन्दे मातरम्

मातृ भूमि की रक्षा हेतु वीरों ने
सरहद पर फहराया वन्दे मातरम्

बच्चे को झुलराती गाती लोरी में
मां ने पाठ पढ़ाया वन्दे मातरम्

राजगुरु, सुखदेव, भगत सिंह ने गाकर
दुनिया को सिखलाया वन्दे मातरम्

दिलीप समदर्शी

जन्म तिथि 05 फ़रवरी, 1970
बथनाहा, अररिया-854316
मोबाइल 870 902 2692

1

हम सब का है अरमान हिंदुस्तान वन्दे मातरम,
हम थाम लेंगे डट के हर तूफ़ान वन्दे मातरम्।

पैग़ाम देकर दोस्ती का दुश्मनी देंगे मिटा,
करते भी हैं सारे जहां का मान वन्दे मातरम्।

अम्नो-सुकूं फ़ैला के हमने पेश की इंसानियत,
धड़कन कहे भारत है मेरी जान वन्दे मातरम्।

अपने वतन के वास्ते अंगार पर हैं हम चले,
तन-मन समर्पित जां भी है क़ुर्बान वन्दे मातरम्।

अपना तिरंगा ये रहे ऊंचा झुके भी क्यूं कभी,
गौरव तिरंगा है वतन की शान वन्दे मातरम्।

दुश्मन वतन के हैं बहुत इसकी निगहबानी करें,
अपनी हिफ़ाज़त में तो दें अवदान वन्दे मातरम्।

धरती ये गुल गुलशन से 'समदर्शी' भरा हरदम रहे,
वंदन वतन गायें विजय का गान वन्दे मातरम्।

2

रखना सुरक्षित है वतन सब गाओ वन्दे मातरम,
कण कण में जिसके है अमन सब गाओ वन्दे मातरम्।

हर इक बला से हो सुरक्षित शस्य श्यामल ये धरा,
हर पल सुगंधित हो चमन सब गाओ वन्दे मातरम्।

अंगार पर चलकर भी हम इस देश का गुण गाएंगे
खुशहाल हो धरती गगन सब गाओ वन्दे मातरम्।

मजबूत होंगे हम सभी इक एकता के मंत्र से
बुझ जायेगी हर इक तपन सब गाओ वन्दे मातरम्।

खाओ शपथ माथे लगाकर धूल मिट्टी देश की
उत्सर्ग होगा तन-सुमन सब गाओ वन्दे मातरम्।

नवीन सी. चतुर्वेदी

जन्मतिथि 1 जनवरी, 1969
कांदिविली पूर्वी, मुम्बई-400101
मोबाइल 996 702 4593

1

बोल मेरे यार बोल वन्दे मातरम्
बोल तू बजा के ढोल वन्दे मातरम्

आसमाँ स्वयं तुझे गले लगाएगा
खोल के परों को बोल वन्दे मातरम्

रक्त में उबाल यों ही थोड़े आयेगा
जोश चाहिए तो घोल वन्दे मातरम्

पानियों में नर्मदा अमोल जिस तरह
बानियों में है अमोल वन्दे मातरम्

बोल बच्चनों के फेर में नहीं उलझ
भावनाओं में टटोल वन्दे मातरम्

तन की शांति मन की शांति चाहिए तो गा
घूम कर तू गोल गोल, वन्दे मातरम्

जिसने थाम कर रखी है राष्ट्र की ध्वजा
है वही अखण्ड पोल वन्दे मातरम्

2

भाईचारे की ध्वजा फहराये वन्दे मातरम्
सबसे हिलमिल कर रहो सिखलाये वन्दे मातरम्

माँ तुम्हारी ही दुआ से धड़कनों में रब्त है
है यही कारन कि दिल दुहराये वन्दे मातरम्

शह्द घुल जाता है मुँह में सोचने के साथ ही
बोलते ही चाशनी टपकाये वन्दे मातरम्

माँ के क़दमों में है जन्नत, बोलना काफ़ी नहीं
नेकदिल तो है वही जो गाये वन्दे मातरम्

हाँ, अक़ीदत चाहिए, शाइस्तगी भी चाहिए
देखना, जुमला नहीं बन जाये वन्दे मातरम्

हम हसद नफ़रत के मारों की यही है इल्तिज़ा
सबके जीवन में सुधा बरसाये वन्दे मातरम्

निरुपमा चतुर्वेदी

जन्मतिथि-11 जनवरी, 1970

सिरसी रोड, जयपुर (राजस्थान)-302012

मोबाइल : 998 391 2042

1

देश को सादर समर्पित गान वन्दे मातरम्
मातृ देवो भव का है ऐलान वन्दे मातरम्

चेतना का बोध है ये मुक्ति का उद्घोष है
राष्ट्र के प्रति प्रेम का आह्वान वन्दे मातरम्

रच दिया बंकिम ने जब 'आनन्दमठ' बंगाल में
ध्येय का तब से बना प्रतिमान वन्दे मातरम्

इक तराना जुड़ गया जब श्वांस की हर डोर से
बन गया स्वातंत्र्य का सोपान वन्दे मातरम्

प्रज्ज्वलित हों दीप चाहे फाग की हो मस्तियाँ
ढोल पर हर थाप का अरकान वन्दे मातरम्

प्रेम और अध्यात्म के आदर्श का यह मेल है
मील का पत्थर बना सहगान वन्दे मातरम्

भक्ति के अनुराग में या योग के वैराग्य में
कर रहे मिलकर सभी गुणगान वन्दे मातरम्

देश के दुश्मन हैं वो "रूपम" सभी ग़द्दार हैं
वो जिन्हें भाया नहीं उन्वान वन्दे मातरम्

2

नारा है हिंद वासियों का वन्दे मातरम्
रखता है हौसलों की ज़िया वन्दे मातरम्

कह कर तो देखें दिल से ज़रा वन्दे मातरम्
साँसों के वास्ते है दुआ वन्दे मातरम्

यशगान भारती का है मधुरिम सी तान में
लय-ताल छंद-बद्ध ऋचा वन्दे मातरम्

पाते है देश भक्ति का मौक़ा भी लोग वो
देते हैं डूब के जो सदा वन्दे मातरम्

मज़हब न जात-पात न कोई भी भेद है
हर दिल में जल रहा है दिया वन्दे मातरम्

भारत की शस्य-श्यामला धरती का बॉंकपन
देखा है जिसने उसने कहा वन्दे मातरम्

जीने का तौर हमको सिखाता है गीत ये
देता है मंत्र एकता का वन्दे मातरम्

पंकज त्यागी ‘असीम’

जन्मतिथि 21 फ़रवरी, 1977
दिल्ली रोड, रुड़की-247667
मोबाइल-823 765 5835

1

आओ बोलें साथ में हम आप वन्दे मातरम्
देश के पूजन का है ये जाप वन्दे मातरम्

छाती चौड़ी होती है मेरी तिरंगा देखकर
और बढ़ाता है रगों में ताप वन्दे मातरम्

देशभक्तों के लिए वरदान सा जयहिंद था
और गौरों के लिए था शाप वन्दे मातरम्

खेल हो या जंग जब भी मान बढ़ता देश का
बोल उठता हूँ मैं अपनेआप वन्दे मातरम्

मानते हैं पुण्य हम इस भूमि की जयकार को
कुछ अभागों के लिए है पाप वन्दे मातरम्

कौन है किसके क़बीले से, मुझे मतलब नही
मैं तो ख़ुश हूँ कि है मेरी खाप वन्दे मातरम्

पूछा कि कैसे करोगे धरती का गुणगान तुम
तो कहा बस एक ही आलाप वन्दे मातरम्

पूर्णिमा सुमन

जन्मतिथि-28मई

सुदामडीह धनबाद-828126

मोबाइल-793 903 7709

1

हर ज़बाँ पर एक ही नारा है वन्दे मातरम्।
दुश्मनों के दिल में इक धड़का है वन्दे मातरम्।

हिन्द की मिट्टी से हम सौगंध खाकर, आए हैं।
मौत के भी सामने ज़िंदा है वन्दे मातरम्।

आँधियों में भी जो ऊँचा सर उठा कर चल सके।
वो वतन का सूरमा कहता है वन्दे मातरम्।

ज़ुल्म की दीवारें अब ढहने को हैं बेसाख़्ता,
देश की हर सिम्त से गूँजा है वन्दे मातरम्।

इसकी हर पंक्ति लुभाती है सभी को इस तरह
एक ज्ञानी आज भी गाता है वन्दे मातरम्।

2

भारत की तू है आन बान और शान वन्दे मातरम्
हर इक ज़बाँ पर है तेरा गुणगान वन्दे मातरम्।

मिट्टी तिरी, चंदन बनी, माथे सजी, है ऐ वतन
तुझ पर लुटा देंगे सभी हम जान वन्दे मातरम्।

नदियों की कल-कल में तेरा है राग सुर की साधना
हर ओर गूँजे बस तेरा यशगान वन्दे मातरम्।

उपवन सुवासित डालियों पर खिल रहे जो फूल हैं
उनसे बना भारत का ये गुलदान वन्दे मातरम्

पर्वत हिमालय से सुरक्षित सरहदें हैं देश की
सागर मचाए शोर का तूफ़ान वन्दे मातरम्

दुश्मन अगर, देखे कभी, गंदी नज़र, से इस तरफ़
तो हम मिटा डालेंगे सब पहचान वन्दे मातरम्

आफ़त कोई आ जाए तो निश्चिंत रहना तुम 'सुमन'
होगा मुखर इक सुर में हिंदुस्तान वन्दे मातरम्

प्यासा अंजुम

जन्मतिथि:-29 सितंबर, 1949

जम्मू-180016.

मोबाइल-941 910 1315

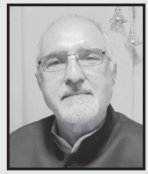

1

इसकी महक से महका चमन वन्दे मातरम्।
हर कोई गाये हो के मगन वन्दे मातरम्।।

हर शख़्स दिल से गा रहा हिन्दोस्तान का।
हर मन में करे पैदा लगन वन्दे मातरम्।।

तब ही हमारे देश में अम्नो-अमान है।
बाँटे हरिक दिशा में अमन वन्दे मातरम्।।

इसके बिना अधूरा है भारत का कीर्तन।
हर भारती का मूल भजन वन्दे मातरम्।।

उगने कभी भी दे नहीं नफ़रत के बीज को।
है बाँटता ये प्रेम रतन वन्दे मातरम्।।

इसकी तभी तो गूंज रही हर कहीं है गूंज।
कहते हैं दिल से अहले-वतन वन्दे मातरम्।।

सूरज के साथ चांद ये "अंजुम" भी गा रहे।
धरती के साथ गाये गगन वन्दे मातरम्।।

2

कहते हुए जो फांसी चढ़े वन्दे मातरम्।
गाते हुए शहीद हुए वन्दे मातरम्।।

आज़ादी हर शहीद के ख़ूं ने दिलाई जो।
आज़ाद देश खुल के कहे वन्दे मातरम्।।

अब देश या विदेश हो आज़ाद घूम कर।
सब से तिरंगा कहता फिरे वन्दे मातरम्।।

छोटा बड़ा हो एक बराबर है गा रहा।
सब के लबों पे ख़ूब सजे वन्दे मातरम्।।

हर इक दिशा में गान यही गूंज है रहा।
हर देश वासी गाता बढ़े वन्दे मातरम्।।

ज़ंजीर अब गुलामी की पहनेगा ये नहीं।
आज़ाद अब सदा ही रहे वन्दे मातरम्।।

सूरज चढ़े या चाँद चढे गाये गीत रोज़।
"अंजुम" भी कहते रोज़ जगे वन्दे मातरम्।।

3

हर किसी को जोड़े वन्दे मातरम्।
हर कोई जब बोले वन्दे मातरम्।।

सच्चे मन से बोल कर देखो सही।
वाणी में रस घोले वन्दे मातरम्।।

हर किसी के ख़ून में मिलकर सदा।
है रगों में दौड़े वन्दे मातरम्।।

मज़हबों को जोड़ना इसका है गुण।
कब कहां है तोड़े वन्दे मातरम्।।

एक दूजे को मिलाने के लिए।
प्रेम के दर खोले वन्दे मातरम्।।

जिसके मन में देश भक्ति हो भरी।
बोलते कब डोले वन्दे मातरम्।।

ये न 'अंजुम' देखे है छोटा बड़ा।
इक बराबर तोले वन्दे मातरम्।।

4

ईश्वर से पाया हिन्द ने वरदान वन्दे मातरम्।
अब बन गया भारत की है पहचान वन्दे मातरम्।।

गुणगान इसका गर्व से हर भारती है कर रहा।
हर देश से दिलवाए जो सम्मान वन्दे मातरम्।।

गाते इसे मिट जाती हैं दुक्खों की सब ही सलवटें।
भरदे जो हर इक मुख पे है मुस्कान वन्दे मातरम्।।

जब भी कठिन आये समय गाये सदा हर भारती।
कठिनाइयों को करता है आसान वन्दे मातरम्।।

बनकर रहेगा विश्वगुरु भारत ये अपना एक दिन।
बाँटे जो सारे विश्व को है ज्ञान वन्दे मातरम्।।

कहता फिरे हर भारती हर मुल्क़ को है शान से।
'भारत की तू है आन बान और शान वन्दे मातरम्।।'

'अंजुम' सदा देखा गया पूरा करे उस काम को।
लेता है अपने मन में जो भी ठान वन्दे मातरम्।।

प्रीति सुमन

जन्मतिथि-4 नवम्बर
परिहार, सीतामढ़ी-843324
मोबाइल 898 733 2733

1

शान अपनी ये वतन की, आन वन्दे मातरम्
भारती का है बढ़ाता मान, वन्दे मातरम्।

झूमता सारा जहाँ जिसकी सदा की गूँज पर
है वतन की ज़ीस्त की पहचान वन्दे मातरम्।

ख़ून से सींचा है जाँबाज़ों ने इस गुलज़ार को
ता-अज़ल अब होगा ये ज़ीशान वन्दे मातरम्।

एकता का है यही पैग़ाम दुनिया के लिए
गा रहे हैं राम भी, रहमान वन्दे मातरम्।

बह रही गंगा की धारा, चूमती राहे-वतन
गूँजता है ता-हिमालय गान, वन्दे मातरम्।

आख़िरी दम तक रहे आज़ाद ये, आबाद ये
है वतन की आबरू-ओ-शान, वन्दे मातरम्।

'प्रीति' अपनी रूह को ख़ाके-वतन पर वार तू
वक़्फ़ है ये ज़िंदगानी, जान वन्दे मातरम्।

बाबा बैद्यनाथ झा

जन्म-तिथि-03 अगस्त, 1955

पूर्णियाँ (बिहार)

मोबाईल-754 387 4127

1

अस्मिता है देश की पहचान वन्दे मातरम्।
बोलने में है अधिक आसान वन्दे मातरम्।

सर्वदा उत्साहवर्धन यह कराता है हमें,
गा रहा है नित्य हिन्दुस्तान वन्दे मातरम्।

इन्द्र का वैभव नहीं है देश से बढ़कर कभी
मन्त्र जैसा यह कराता भान वन्दे मातरम्।

गीत यह जयघोष का देता सभी को प्रेरणा,
नित कराता देश का उत्थान वन्दे मातरम्।

विश्वगुरु की भाँति जग को बाँटते हैं ज्ञान हम,
सर्वदा देता हमें मुस्कान वन्दे मातरम्।

आज इस संसार को इस देश से ही आस है,
आज सबसे पा रहा सम्मान वन्दे मातरम्।

प्राण का उत्सर्ग हँसकर दे सकूँ "बाबा" अगर,
तो करे स्वीकार यह अवदान वन्दे मातरम्।

भूपेन्द्र सिंह ‘होश’

जन्मतिथि : 6 अक्टूबर 1946

लखनऊ-226 016. [उ. प्र.]

मोबाइल : 735 571 6884

1

इस देश की पहचान वन्दे मातरम्
है राष्ट्र का अभिमान वन्दे मातरम्

भारत के हर इक देश-प्रेमी के लिए
है आन बान औ शान वन्दे मातरम्

यह भूमि हम सबके लिए है मातृभू
इस सच का है प्रतिमान वन्दे मातरम्

माँ भारती पर मर मिटे गाते हुए
यह शौर्य का आह्वान वन्दे मातरम्

वे लोग किस अधिकार से भारत में हैं
कहते न जो नादान वन्दे मातरम्

लेकर सनातन मूल्य हम हैं अग्रसर
रखता हमें गतिमान वन्दे मातरम्

ये राष्ट्र के प्रति भक्ति की अभिव्यक्ति है
है माँ तेरा गुणगान वन्दे मातरम्

2

क्यों न हो भारत का दृढ़ विश्वास वन्दे मातरम्
लिख चुका है देश का इतिहास वन्दे मातरम्

था विदेशी आततायी का बढ़ा अन्याय जब
बन गया उनके लिए खग्रास वन्दे मातरम्

राष्ट्र-निष्ठा में ये बंकिम चंद्र जी ने है रचा
भावना-प्रेरित सुघड़ विन्यास वन्दे मातरम्

पार सीमा से करें पोषित जो शठ आतंक को
बन गया उनके लिए संत्रास वन्दे मातरम्

आत्मनिर्भरता के दृढ़ संकल्प का गुरु-मंत्र है
कीर्ति वैभव शक्ति का अनुप्रास वन्दे मातरम्

हो यही अवधारणा यह विश्व एक परिवार है
है सुनिश्चित-मुक्ति का, आभास वन्दे मातरम्

अंकुरित है यह सनातन संस्कृति के बीज से
प्रेम श्रद्धा भक्ति का उच्छ् वास वन्दे मातरम्

महेश कुमार कुलदीप

जन्मतिथि-09 जनवरी, 1980

बाड़मेर, राजस्थान-344001

मोबाइल–907 993 7636

1

हर कौम हर ज़बान कहे वन्दे मातरम्
हर दिल के दरमियान रहे वन्दे मातरम्

माँ भारती की शान को ऊँचाइयाँ मिलें
अक्षुण्ण सदैव गान रहे वन्दे मातरम्

मंदिर की घंटियों में सुनाई दिया करे
मस्जिद की भी अज़ान कहे वन्दे मातरम्

ज़ुल्मो-सितम की आँच में सदियाँ गुज़र गईं
और कितने इम्तिहान सहे वन्दे मातरम्

फिर से अँधेरा फैल न जाए निराशा का
सीने में लौ समान दहे वन्दे मातरम्

मन देशप्रेम से न कभी रिक्त हो सके
रग-रग में बन गुमान बहे वन्दे मातरम्

'कुलदीप' की तो कामना इतनी है हर सदी
धरती से आसमान कहे वन्दे मातरम्

2

हर सितम हर ज़ुल्म का प्रतिकार वन्दे मातरम्
देश की संचेतना का सार वन्दे मातरम्

यूँ तो कितने ख़ास दिन मख़्सूस होते हैं यहाँ
सबसे बढ़कर है मगर त्योहार वन्दे मातरम्

यह हमारी भावनाओं का मुकम्मल ज्वार है
सिर्फ़ इक नारा नहीं है यार वन्दे मातरम्

त्याग तप बलिदान की गाथा सुनाए हर क़दम
वीरता का है अमर श्रृंगार वन्दे मातरम्

जब गुलामी के भँवर में था सफ़ीना देश का
नाख़ुदाओं की बना पतवार वन्दे मातरम्

ख़ून की हर बूँद में अहसास बनकर है घुला
देशभक्तों के लिए उपहार वन्दे मातरम्

जब तलक है जान तन में और सीने में धड़क
मेरे होठों पर रहे हर बार वन्दे मातरम्

मिथिलेश 'आदित्य'

25 दिसम्बर, 1975

अररिया–854334

मोबाइल 997 353 6489

1

देश का सम्मान है यह गान वन्दे मातरम्
वीरों ने हँस कर दिया बलिदान वन्दे मातरम्

हौसलों का शहर है यह रक्त का संचार है
टूटते मन के लिए वरदान वन्दे मातरम्

धुंद हो या धूप हो सब लोग रहते काम पर
सत्य निष्ठा की मधुर मुस्कान वन्दे मातरम्

फ़ौज की ललकार है यह मंत्र ऊर्जा स्रोत है
गाते गाते होते हैं क़ुर्बान वन्दे मातरम्

श्रम के वैभव से वतन अपना बुलंदी पर रहे,
हिन्द के अधरों पे हो शुभ गान वन्दे मातरम्

मीना भट्ट सिद्धार्थ

जन्मतिथि-30 अप्रैल, 1953
मोबाइल-797 416 0268
जबलपुर म. प्र. 482008

1

आज कह दो शान से है जान वन्दे मातरम्
देश के हर लक्ष्य का संधान वन्दे मातरम्

देश की मिट्टी है चंदन शीश तुम धारो इसे
हमसे जो करवा दे सब बलिदान वन्दे मातरम्

चीर दो दुश्मन को और ग़द्दार को तुम दो सज़ा
आज कर दो जंग का ऐलान वन्दे मातरम्

बाल गंगाधर तिलक का स्वप्न है साकार अब
अब हमारे देश का अभिमान वन्दे मातरम्

याद कर लो तुम शहीदों ने किया उत्सर्ग जो
अपनी आज़ादी की है पहचान वन्दे मातरम्

पर्व है गणतंत्र लहराता तिरंगा व्योम में
आओ सब मिल कर करें जयगान वन्दे मातरम्

विश्व नतमस्तक हुआ सम्मुख हमारे देश के
क्यों नहीं हम सब करें गुणगान वन्दे मातरम्

मुकेश सिंहानिया

जन्मतिथि 26 जनवरी, 1974

छत्तीसगढ़-495671

मोबाइल–982 612 6384

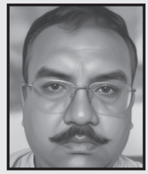

1

स्वाधीनता का मूल वचन वन्दे मातरम्
गुंजायमान धरती गगन वन्दे मातरम्

जद्दो-जहद की लम्बी सी इक दास्ताँ के बीच
उम्मीद की बस एक किरण वन्दे मातरम्

तैनात सरहदों पे हैं दिन रात ही जवान
गाते हुए तराने वतन वन्दे मातरम्

हर क़िस्म के हैं फूल गुलिस्तान में खिले
आबाद ख़ुशबुओं का चमन वन्दे मातरम्

नफ़रत के बीज बो रहे कुछ अम्न के उदू
डर है न ये बिगाड़े सदन वन्दे मातरम्

आहत जरा सी बात पे होने लगे हैं लोग
करना संभल के शब्द चयन वन्दे मातरम्

इस वैमनस्यता को ये कटुता को देख कर
माँ भारती के नम हैं नयन वन्दे मातरम्

2

ख़ुशहाल मेरा मुल्क बने वन्दे मातरम्
गंगा मुहब्बतों की बहे वन्दे मातरम्

परचम बुलंदियों पे रहे अपने देश का
जय घोष सारा हिंद करे वन्दे मातरम्

सौहार्द भाईचारे की ऐसी मिसाल दें
अपना स्वजन हर एक लगे वन्दे मातरम्

क़ुर्बान इसके वास्ते है जिस्मो-जान सब
आठों पहर ही दिल में बसे वन्दे मातरम्

हिंदोस्ताँ में आया है फिर मौका जश्न का
ख़ुशियों के रँग गुलाल उड़े वन्दे मातरम्

अवसर मिला मनाने का अमृत महोत्सव
क़िस्मत से अपने भाग्य जगे वन्दे मातरम्

शिकवे गिले हज़ार भी हो मुल्क से मगर
माँ भारती का मान रहे वन्दे मातरम्

रमा प्रवीर वर्मा

जन्मतिथि : 2अक्टूबर, 1975
नागपुर, महाराष्ट्र-440024
मोबाईल 966 541 2860

1

भारती के भाल का श्रृंगार वन्दे मातरम्
हिम गिरी के है गले का हार वन्दे मातरम्

दुश्मनों के वास्ते तलवार वन्दे मातरम्
कश्तियों के साथ ज्यों पतवार वन्दे मातरम्

प्रेम से परिपूर्ण हो इस मातृभूमि की हवा
हर्ष से उल्लास से हर बार वन्दे मातरम्

विश्व के हर देश से प्यारा हमारा देश है
बस हमारा है यही घरबार वन्दे मातरम्

झूठ की बुनियाद रखना धर्म सिखलाता नहीं
है सदा ही सच का पैरोकार वन्दे मातरम्

ये समंदर की लहर में नाद बनकर गूँजता
और पावन गंग की जलधार वन्दे मातरम्

नाम जिनके स्वर्ण से लिक्खे 'रमा' इतिहास नें
उन शहीदों के अमर उद्गार वन्दे मातरम्

2

इस धरा की शान, इसका मान वन्दे मातरम्
हम सभी की है यही पहचान वन्दे मातरम्

रंग, भाषा, धर्म चाहे हों अलग कितने यहाँ,
पर सभी के दिल का है अरमान वन्दे मातरम्

पर्वतों में और नदियों में हवा में खेत में
गूँजता है एक ही तो गान वन्दे मातरम्

हो गए हँसते हुए क़ुर्बान जो इस देश पर
हो गया उनका अमर बलिदान वन्दे मातरम्

जो शहीदों ने लिखी थी रक्त से वह दास्ताँ,
बन गई इतिहास की मुस्कान वन्दे मातरम्

ज्ञान, साहस, कर्म का संदेश देता है हमें,
बन रहा जन-जन का ये अभियान वन्दे मातरम्

है 'रमा' हमको क़सम मिटने नहीं देंगे कभी
मातृभूमि का अटल सम्मान वन्दे मातरम्

रमेश 'कँवल'

जन्मतिथि-25 अगस्त, 1953

पटना 800014

मोबाइल-878 976 1287

1

देश के वीरों का है शृंगार वन्दे मातरम्
जो लुभाए मन को वो त्योहार वन्दे मातरम्

शत्रुओं के दंभ का उपचार वन्दे मातरम्
देशभक्ति का विपुल संसार वन्दे मातरम्

आस्था को जो मिले उपहार वन्दे मातरम्
मान्यताओ के गले का हार वन्दे मातरम्

जो ऋषि बंकिम ने अपनी विद्वता के स्वर दिए
शब्दों के सौन्दर्य का वह तार वन्दे मातरम्

वर्जनाओं से सुरक्षित रख सके जो देश को
उस अलौकिक सृष्टि का उपचार वन्दे मातरम्

प्रेरणा जीने की, मुक्ति की ऋचा, शुभ मंत्र है
सच बताऊँ शौर्य का आधार वन्दे मातरम्

नाम पर बंकिम के ही कॉलेज मेरा था 'कँवल'
मुझमें है सद्भावना का ज्वार वन्दे मातरम्

2

गुणगान भारती का मधुर वन्दे मातरम्
सद्भाव राष्ट्र धुन का नूपुर वन्दे मातरम्

गाते है प्रेमभाव से सुर वन्दे मातरम्
घबराएं सुन के सारे असुर वन्दे मातरम्

दुर्गा, भवानी, सर्वमयी सर्वरूपिणी
घर में विराजें गायें जो उर वन्दे मातरम्

विद्या इसी में प्राण यहीं भक्ति भी यहीं
साक्षात होंगे छेड़िए सुर वन्दे मातरम्

नर्तन करें हृदय जो मधुर राष्ट्रगान पर
आह्लाद से भर दे सभी पुर वन्दे मातरम्

भयभीत हो गए अरि दल के महारथी
सुनते ही दूर नाद प्रचुर वन्दे मातरम्

ग़ज़लें नहीं सरल हैं 'कँवल' जो कहें सभी
जबसे मिला रदीफ़ निठुर वन्दे मातरम्

रवि खण्डेलवाल

जन्म तिथि : 14 सितम्बर, 1951

ऐरोड्रॉम रोड, इन्दौर (म.प्र.) 452005

मोबाइल-769 790 0225

1

बंकिम के राष्ट्र वाद का था, गान वन्दे मातरम,
आज़ाद, हिंद देश हो, फ़रमान वन्दे मातरम्।

कन्याकुमारी से कभी, कश्मीर से सुना गया,
भारत की आन-बान औ' है शान वन्दे मातरम्।

अभिशाप बन गया था ये, गोरों के वास्ते, वहीं,
हम भारतीय के लिए वरदान, वन्दे मातरम्।

दो बंद गीत के सदा, स्वीकार पूरे देश को,
बाक़ी के चार बंद हैं, व्यवधान, वन्दे मातरम्।

ये सोचने की बात है पंद्रह दशक के बाद ही,
क्यों कर गया है हाकिमों का ध्यान वन्दे मातरम्।

आदेश अब से है हुआ पारित सभी के वास्ते,
करना छहों चरण का है सम्मान, वन्दे मातरम्।

कुछ भी कहो है पर यकीं सारे जहां में आजकल,
भारत की बन गया है 'रवि' पहचान वन्दे मातरम्।

2

कहनी ग़ज़ल, रदीफ़ है श्रीमान, 'वन्दे मातरम्',
हासिल हुआ है नज़्म का उनवान, 'वन्दे मातरम्'।

आज़ाद हिंद के लिए जाँबाज देश भक्त तो,
उद्घोष कर, हैं हो गए क़ुर्बान, 'वन्दे मातरम्'।

बंकिम रचित ये गीत है माँ भारती की वंदना,
माँ भारती के शौर्य का, यश गान 'वन्दे मातरम्'।

पंद्रह दशक पे गीत के चर्चा हुई तो ये हुआ,
संसद में गूँजता रहा उनवान, 'वन्दे मातरम्'।

संकट की हर घड़ी में ये संघर्ष का प्रतीक है,
काली अँधेरी रात में, दिनमान 'वन्दे मातरम्'।

भाषा कई हैं देश में, हैं जाति धर्म भी कई,
हैं हम अनेक पर सभी इक जान, 'वन्दे मातरम्'।

'सारे जहाँ से' है कही इक़बाल ने भी 'रवि' ग़ज़ल,
अच्छा हमारा देश हिन्दोस्तान, 'वन्दे मातरम्'।

राजकान्ता राज

जन्मतिथि-15जनवरी
शिवपुरी, पटना 800023
मोबाइल-9308245361

1

कहे हर एक शख्स की ज़ुबान वन्दे मातरम्
जहाँ में हिंद है मेरा महान वन्दे मातरम्

जगह जगह पे जीत की ख़ुशी मना रहे सभी
गले से लग के गायें सारे गान वन्दे मातरम्

अलग अलग है जात पात है अलग विचार भी
सभी को पर दिखा नया विहान वन्दे मातरम्

गंवा दिए वतन पे जान वीरों ने ख़ुशी ख़ुशी
पुकारते रहे सभी जवान वन्दे मातरम्

धरा हो शस्य श्यामला, वसुंधरा प्रसन्न हो
ख़ुशी में झूमें गायें सब किसान वन्दे मातरम्

रहन, सहन, मिलन के भाव गंगा यमुना नर्मदा
दिखाए सभ्यता के शत निशान वन्दे मातरम्

2

शीतल पवन धरती गगन की शान वन्दे मातरम्
हर्षित बहुत होते हैं सुन कर गान वन्दे मातरम्

करते नमन औ देते इसको मान वन्दे मातरम्
मेरे वतन की जान है यशगान वन्दे मातरम्

पर्वत शिखर मन मुग्धकारी और नदियों की लहर
कितने खनिज और सोने की है खान वन्दे मातरम्

गाते हैं जब भारत के वासी शान से इस गान को
होता है ख़ुद पर हम को भी अभिमान वन्दे मातरम्

होली दिवाली ईद पर ख़ुशियाँ मनाते हम सभी
गाते हैं मिल-जुल राम और रहमान वन्दे मातरम्

शेखर, भगत, सुखदेव, बिस्मिल, राज गुरु ने मस्त हो
कर दी है गाते गाते जां क़ुर्बान वन्दे मातरम्

आने न देंगे भारती पर 'राज' कोई आँच हम
है देशहित के वास्ते संधान वन्दे मातरम्

रीना धीमान 'स्वर्ण'

जन्मतिथि-01 अगस्त, 1977
सीवुड्स, नवी मुंबई 400 706 (महाराष्ट्र)
मोबाइल नं : 966 335 5575

1

हिन्द के हर शख़्स की है शान वन्दे मातरम्
गायें हम सब शान से ये गान वन्दे मातरम्

भेद मन के सब भुलाकर एक ही सुर में कहें
बन गया है अब हमारा मान वन्दे मातरम्

लाल थे माँ भारती के प्राण जो क़ुर्बान कर
कह गए वो दे के अपनी जान वन्दे मातरम्

एकता का मन्त्र बन कर गूँजता है हर कहीं
गा रहा है सारा हिन्दुस्तान वन्दे मातरम्

आने वाली नस्ल को दें हम विरासत में यही
हाँ मिला हमको यही वरदान वन्दे मातरम्

बच्चे-बूढ़े की ज़बां से गीत बनकर गूँजता
इस क़दर पाता यहाँ सम्मान वन्दे मातरम्

बानगी ये 'स्वर्ण' ने सम्मान में लिक्खी अभी
गीत बंकिम का बना पहचान वन्दे मातरम्

2

बेशक सितम हज़ार सहे वन्दे मातरम्
ये जिस्म ये ज़मीर कहे वन्दे मातरम्

तारीफ़ तेरी अहल-ए-वतन झूम कर करें
होठों पे पाक लफ़्ज़ रहे वन्दे मातरम्

सींचा है पूर्वजों ने लहू से वतन तुम्हें
रग-रग अब वो नूर बहे वन्दे मातरम्

मन्दिर हों या कि मस्जिदें इक पाठ सब पढ़ें
दीवार नफ़रतों की ढहे वन्दे मातरम्

बाँटें सियासतें न इसे वोट के लिए
हर ओर संविधान गहे वन्दे मातरम्

पीढ़ी नई ख़याल भी चाहे है कुछ नया
नारा विरासतों में रहे वन्दे मातरम्

बेशक मियाद ख़त्म हो दुनिया की आज ही
पर वादियों में गूँज रहे वन्दे मातरम्

रेखा भारती मिश्रा

जन्मतिथि-25 फ़रवरी, 1984

क़दमकुआँ, पटना-800003

मोबाइल 930 816 2129

1

चेतना मन की हृदय का रंग वन्दे मातरम्
सबके दिल में बसता एक उमंग वन्दे मातरम्

गीत इसको मत कहो, है देश का गौरव यही
है हमारी प्रेरणा का ढंग वन्दे मातरम्

याद हैं बंकिम चटर्जी, याद सारे वीर हैं
आज भी सेनानियों के संग वन्दे मातरम्

देश की छाती पे खिलता ये सुहाना फूल है
देश की रंगत लिए बहुरंग वन्दे मातरम्

फूल, पर्वत, पेड़, नदियाँ आज हमसे कह रही
राष्ट्र की आवाज़ है अतरंग वन्दे मातरम्

मातृभूमि को नमन कर गीत बल के गाएंगे
राष्ट्रहित के तान का है अंग वन्दे मातरम्

चित्र मनमोहक सजा है, देश उन्नति कर रहा
देश की धड़कन है और उमंग वन्दे मातरम्।

2

तिरंगे में बसी हर जान वन्दे मातरम्
हमारे देश का अभिमान वन्दे मातरम्

भगत, अशफ़ाक, बिस्मिल, राजगुरु बनकर जिएं
पुकारे उनका हर बलिदान वन्दे मातरम्

खड़े रहते हैं सरहद पर हमारे वीर जो
तिरंगा ओढ़, गाएं गान वन्दे मातरम्

वतन की माटी है चंदन, तिलक इसकी करें
धरा को चूम, हो यश गान वन्दे मातरम्

है पावन गंग की धारा, हवा मधुमय बहे
कोयलिया कूके मीठी तान वन्दे मातरम्

दरख्तों से अरुण की ज्योति लिपटी झूमती
धरा का कर रही यशगान वन्दे मातरम्

ज़मीं पर छोड़कर निज प्रेम की परछाई को
वतन का ऊंचा करती मान वन्दे मातरम्

संजीव प्रभाकर

जन्मतिथि 3 फ़रवरी, 1980

गाँधीनगर 382021 (गुजरात)

मोबाइल 908 213 6889

1

प्रार्थना केवल नहीं उद्घोष वन्दे मातरम्,
दुश्मनों के सामने है रोष वन्दे मातरम्।

देखिए पन्ने पलटकर देश के इतिहास के,
है हमारे देश का जयघोष वन्दे मातरम्।

देश पर जो मर मिटे उन देशभक्तों के लिए,
पारितोषिक और है परितोष वन्दे मातरम्।

आत्मबल की आत्मा है चित्त की चैतन्यता,
उत्सवों का उत्स है निर्घोष वन्दे मातरम्।

यह धरा सम्पन्न करती है हमें धन-धान्य से,
दण्डवत होकर करें उद्घोष "वन्दे मातरम्!"

2

नमन हज़ार बार, राम राम, वन्दे मातरम्!
हे मातृभूमि आपको प्रणाम, वन्दे मातरम्!

नहीं है विश्व में सहिष्णु कोई भी तेरी तरह,
ओ मादरे-वतन तुझे सलाम, वन्दे मातरम्!

पवित्र एक डोर से हम आप हैं जुड़े हुए,
कि माँ हैं आप, पुत्र हम अवाम, वन्दे मातरम्!

रगों में दौड़ता है ख़ून बन के भारतीय के,
हुज़ूर! सिर्फ़ है नहीं कलाम वन्दे मातरम्।

हमारी अस्मिता, हमारी आन बान शान है,
अदब से बोलते हैं ख़ासो-आम, "वन्दे मातरम्!"

सत्यभामा सिंह ‘ज़िया’

जन्मतिथि 1जुलाई, 1960
थाने मुंबई महाराष्ट्र-421301
मोबाइल-800 713 0204

1

देश के सम्मान का है गान वन्दे मातरम्
गीत बंकिंम ने लिखा अभिज्ञान वन्दे मातरम्

भूल मत जाना शहीदों की शहादत को कभी
देश हित कह कर हुए क़ुर्बान वन्दे मातरम्

गूंजती है कानों में हर वक्त उनकी बोलियां
जिनके जीवन का रहा अरमान वन्दे मातरम्

चढ़ गए फांसी पे हँसते लाल पूरे देश में
बन गई है उनकी इक पहचान वन्दे मातरम्
+
खून की नदियां बहीं आज़ाद होने के लिए
है तिरंगा अब हमारी शान वन्दे मातरम्

धर्म भाषा जाति की खाई पटेगी देखना
गाए मन से जब ये हिंदुस्तान वन्दे मातरम्

देवताओं की रही है भूमि भारत की ‘ज़िया’
इसलिए मस्तक झुकाना आन वन्दे मातरम्

सुरेंद्र कुमार सैनी

जन्म-तिथि : 02 नवंबर, 1950

रुड़की (उत्तराखंड)-247667

मोबाइल नंबर-790 619 1781

1

जंगे आज़ादी का था अरमान, वन्दे मातरम्
था शहादत के लिए ऐलान, वन्दे मातरम्

चूम कर फाँसी का फंदा जो वतन पर मिट गये
उन शहीदों का रहा था गान, वन्दे मातरम्

गर वतन से प्यार है तो ये कभी मत भूलना
है शहीदों के लहू की शान, वन्दे मातरम्

आज बंकिमचंद्र का भी नाम इससे है अमर
दे गया वो देश को वरदान, वन्दे मातरम्

देश के कण-कण से गुंजित हो रहा है आज ये
बन गया अब देश का अभिमान, वन्दे मातरम्

सैनिकों की धड़कनों में ये बसा पूरी तरह
वीरता की आज भी है आन, वन्दे मातरम्

नाम लेकर दीन का इसको नहीं जो गा रहे
दे रहा उनको भी हर सम्मान, वन्दे मातरम्

मुल्क अब आज़ाद है सबको बराबर हक़ मिले
सब दबे-कुचलों की है मुस्कान, वन्दे मातरम्

इसका हर इक शब्द करता मातृभूमि को नमन
देश भक्तों के लिए है प्राण, वन्दे मातरम्

सुभाष मित्तल सत्यम्

जन्मतिथि-4 सितंबर, 1948

अहमदाबाद-380008 गुजरात

मोबाईल–935 211 8708

1

माँ भारती को है नमन ये गीत वन्दे मातरम्।
है उसकी निज संतान की मृदु प्रीत वन्दे मातरम्।

अपने चमन के द्रुम हरित हैं झूमते जो वायु में,
या फूल सुंदर लाल, सित या पीत वन्दे मातरम्।

स्वाधीनता योद्धा कभी भी हार कर हारे नहीं
हर इक क़दम पर मानते थे जीत वन्दे मातरम्।

है बंकिमी उपहार यह तो मातृ-पद-अरविंद में,
है माँ का वर्णित रूप वत्सल गीत वन्दे मातरम्।

थे क्रांतिकारी तो सभी हर जाति के हर धर्म के,
प्राणों से भी प्रिय था उन्हें ओ मीत वन्दे मातरम्।

ये नित ही वीरों के लिए थी प्रेरणा-गंगोतरी,
हर ज़ुल्म सह कर मुंह पे था संगीत वन्दे मातरम्।

हर शीत में गरमी उन्हें देता रहा था यह सतत,
पर ग्रीष्म में यह बन गया था शीत वन्दे मातरम्।

है सांस्कृतिक गौरव हमारा गान ये 'सत्यम्' रहा,
ये डेढ़ सौ वर्षों से है निज रीत वन्दे मातरम्।

2

भारती का गान वन्दे मातरम्।
देश का अभिमान वन्दे मातरम्।

भक्त बंकिम ने दिया था कर कृपा,
हमको ये वरदान वन्दे मातरम्।

देश हित में जान जाए दुख नहीं,
पर बचे यह जान वन्दे मातरम्।

शेर की इस गर्जना से भीत रिपु,
पंछियों की तान वन्दे मातरम्।

छेड़ती हैं गंग, यमुना, आदि सरि,
नित्य कलकल गान वन्दे मातरम्।

सिंधु लहरें कर रही हैं ज़ुल्म से,
युद्ध का आह्वान वन्दे मातरम्।

श्रम, अहिंसा, प्रेम, सत, सहयोग से,
सांस्कृतिक-पहचान वन्दे मातरम्।

पी के सत्यम् जीवनी विष जी रहे,
क्योंकि अमृत-पान वन्दे मातरम्।

3

नित निराशा में रहा है आस वन्दे मातरम्।
बन गया है मन का इक विश्वास वन्दे मातरम्।

बात मानी ध्वंसकों की और फिर काटा जिसे,
दे रहा वह फिर भी सबको हास वन्दे मातरम्।

गान तो अच्छे लगे हैं बहुत से हमको मधुर,
पर बहुत है उन सभी में ख़ास वन्दे मातरम्।

सुत, सुता, माता, पिता, घर और पत्नी प्रिय हमें,
उन सभी से दिल के लेकिन पास वन्दे मातरम्।

मोगरा, जूही, गुलाबों की महक है अति मधुर,
किंतु होती सबसे मधुरिम बास वन्दे मातरम्।

है भरा अनुभूतियों से मन ये कोमल तो मगर,
खास दिल में प्रेम है अहसास वन्दे मातरम्।

दीजिए आदेश माता कोई सेवा का मुझे,
मैं तुम्हारा दास और अनुदास, वन्दे मातरम्!

हिमकर श्याम

जन्मदिन : 16जनवरी, 1973
मोराबादी, राँची : 834008, झारखण्ड.
मोबाइल : 860 317 1710

1

है हमारे राष्ट्र का यश गान वन्दे मातरम्
गर्व से कहता है हिंदुस्तान वन्दे मातरम्

आन है, सम्मान है ईमान वन्दे मातरम्
देशभक्तों के लिए वरदान वन्दे मातरम्

मातृ-भू की वंदना की है यही पावन ऋचा
राष्ट्र के नव जागरण का गान वन्दे मातरम्

भावना का ज्वार है, हुंकार है, जय घोष है
द्रोह का स्वर, क्रांति का आह्वान वन्दे मातरम्

प्रेरणा स्वाधीनता की, मुक्ति की उद्घोषणा
शौर्य साहस त्याग तप बलिदान वन्दे मातरम्

दासता को मार ठोकर तोड़ कर सब बेड़ियाँ
कोटि जन के रोष का तूफान वन्दे मातरम्

यह नहीं है शब्द, ऊर्जा स्रोत है इस देश का
पीढ़ियों से लक्ष्य का संधान वन्दे मातरम्

2

है आन-बान हिन्द का गुमान वन्दे मातरम्
अटूट देश-प्रेम का निशान वन्दे मातरम्

है कंठ-कंठ पर सजा, रचा-बसा है श्वास में
कहे बड़े ही नाज़ से ज़ुबान वन्दे मातरम्

अजर-अमर है वंदना, यही पुनीत भावना
दिशा-दिशा में गूँजता है गान वन्दे मातरम्

रगों में जोश भर रहा ये बोल बेमिसाल है
हमारे हौसलों का है उड़ान वन्दे मातरम्

ये एकता का मंत्र है, जुनून है अवाम का
प्रतीक स्वाभिमान का महान वन्दे मातरम्

जो लक्ष्य था मिला नहीं, मगर उमीद शेष है
लगे तिमिर में ज्योति का वितान वन्दे मातरम्

विभिन्न राज्यों के कवि/कवयित्रियों के नाम

बिहार **32**

1. अनिल कुमार सिंह, पटना 2
2. अरुण कुमार आर्य, पटना 2
3. अविनाश अमन, पटना 2
4. आराधना प्रसाद, पटना 1
5. कुमार पंकजेश, पटना 2
6. ज्योति मिश्रा, पटना 1
7. डॉ. पूनम सिन्हा 'श्रेयसी', पटना 2
8. डॉ. मेहता नगेन्द्र सिंह 1
9. डॉ. सुधा सिन्हा, पटना 1
10. रमेश 'कँवल', पटना 2
11. राजकान्ता राज, पटना 2
12. रेखा भारती मिश्रा, पटना 2
13. इकराम हुसैन 'शाद', भागलपुर 3
14. डॉ. पुष्प कुमार राय, भागलपुर 1
15. ज्वाला सांध्यपुष्प, समस्तीपुर 2
16. डॉ. नरेन्द्र कुमार सिंह 'त्यागी', समस्तीपुर 1
17. दिलीप समदर्शी, अररिया 2
18. मिथिलेश 'आदित्य', अररिया 1
19. बाबा बैद्यनाथ झा, पूर्णिया 1
20. प्रीति सुमन, सीतामढ़ी 1

जम्मू और कश्मीर **04**

21. प्यासा अंजुम, जम्मू 4

झारखंड **07**

22. चाँद मुंगेरी, बोकारो 2
23. डॉ. संगीता नाथ 'संगीत', धनबाद 1
24. पूर्णिमा सुमन, धनबाद 2
25. हिमकर श्याम, रांची 2

छतीसगढ़ **02**

26. मुकेश सिंहानिया, छतीसगढ़ 2

गुजरात **07**

27. ऋषिपाल धीमान 'ऋषि', अहमदाबाद 2
28. संजीव प्रभाकर, गांधीनगर 2
29. सुभाष मित्तल सत्यम्, अहमदाबाद 3

महाराष्ट्र **08**

30. डॉ. कनक लता तिवारी, नवी मुम्बई 1
31. नवीन सी. चतुर्वेदी, मुम्बई 2
32. रमा प्रवीर वर्मा, नागपुर 2
33. रीना धीमान 'स्वर्ण', नवी मुम्बई 2
34. सत्यभामा सिंह 'ज़िया', मुम्बई 1

मध्य प्रदेश **05**

35. डॉ. प्रेमानंद सरस्वती, इंदौर, 2
36. मीना भट्ट सिद्धार्थ, जबलपुर 1
37. रवि खण्डेलवाल इंदौर 2

राजस्थान **07**

38. डॉ. सीमा विजयवर्गीय, अलवर, राजस्थान 1

39. दिनेश सिंदल, जोधपुर 2
40. निरुपमा चतुर्वेदी, जयपुर 2
41. महेश कुमार कुलदीप, बाड़मेड़ राजस्थान 2

हरियाणा **02**

42. डॉ. विनोद प्रकाश गुप्ता ‘शलभ’, गुरुग्राम 2

हिमाचल प्रदेश **01**

43. ज़ाहिद अबरोल, ऊना, हिमाचल 1

उत्तर प्रदेश **19**

44. अमित ‘अहद’, सहारनपुर 2
45. अशोक ‘अंजुम’, अलीगढ़ 2
46. आनन्द पांडेय ‘तन्हा’, कानपुर 2
47. कविता विकास, नोएडा 2
48. डॉ. अर्चना गुप्ता, मुरादाबाद 2
49. डॉ. कृष्णकुमार ‘नाज़’, मुरादाबाद 1
50. डॉ. ब्रह्मजीत गौतम, ग़ाज़ियाबाद 2
51. डॉ. शिव ओम अम्बर 1
52. डॉ. सुनीता सिंह ‘सुधा’, वाराणसी 1
53. पंकज त्यागी ‘असीम’, रुड़की 1
54. सुरेंद्र कुमार सैनी, रुड़की 1
55. भूपेन्द्र सिंह ‘होश’, लखनऊ 2

नई दिल्ली **03**

56. कालजयी घनश्याम, नई दिल्ली 1
57. डॉ. आनन्द किशोर, दिल्ली 2 कुल 97 नज़्में

ग़ज़लकारों के नाम, शहर, मोबाइल नंबर और उनकी जन्मतिथियाँ

क्रमांक	नाम	शहर	मोबाइल नंबर	जन्म तिथि
1	**अनिल कुमार सिंह**	पटना	943 115 0967	2 जनवरी, 1959
2	**अमित 'अहद'**	सहारनपुर	967 515 0538	23 जून, 1981
3	**अरुण कुमार आर्य**	पटना	943 162 0560	16 मई, 1955
4	**अविनाश अमन**	पटना	787 067 8786	19 जनवरी, 1978
5	**अशोक 'अंजुम'**	अलीगढ़	925 877 9744	25 सितंबर 1966
6	**आनन्द पाण्डेय 'तन्हा'**	कानपुर	936 911 0036	31 अगस्त, 1957
7	**आराधना प्रसाद**	पटना	725 060 6100	23 मई, 1973
8	**ऋषिपाल धीमान 'ऋषि'**	अहमदाबाद	942 833 0490	5 जुलाई, 1957
9	**इकराम हुसैन शाद**	भागलपुर	840 972 7507	05 जनवरी, 1975
10	**कविता विकास**	नोएडा (यू. पी.)	943 132 0288	28 फरवरी
11	**कालजयी घनश्याम**	नई दिल्ली	981 013 7967	01 जुलाई, 1964

12	**कुमार पंकजेश**	पटना	878 938 7721	16जून, 1963
13	**चाँद मुंगेरी**	बोकारो स्टील सिटी	920 409 3040	11मई, 1950
14	**ज्योति मिश्रा**	पटना	950 455 7272	7 जुलाई
15	**ज़ाहिद अबरोल**	ऊना, हिमाचल प्रदेश	981 664 3939	20 दिसम्बर, 1950
16	**ज्वाला सांध्यपुष्प**	पटोरी, समस्तीपुर	926 275 7523	5 मार्च, 1955
17	**डॉ. अर्चना गुप्ता**	मुरादाबाद	945 603 2268	15 जून 1965
18	**डॉ. आनंद किशोर**	दिल्ली	892 074 7891	4 दिसम्बर, 1962
19	**डॉ. कनक लता तिवारी**	नवी मुंबई	908 216 9504	6 जून, 1958
20	**डॉ. कृष्णकुमार 'नाज़'**	मुरादाबाद	992 737 6877	10 जनवरी, 1961
21	**डॉ. नरेन्द्र कुमार सिंह 'त्यागी'**	समस्तीपुर	911 357 4997	21 जनवरी, 1955
22	**डॉ. पुष्प कुमार राय**	भागलपुर	626 053 528?	18 जनवरी, 1976
23	**डॉ. पूनम सिन्हा 'श्रेयसी'**	पटना	834 048 4896	5 सितम्बर
24	**डॉ. प्रेमानन्द सरस्वती**	इंदौर	932 907 8390	2 अगस्त 1969
25	**डॉ. ब्रह्मजीत गौतम**	ग़ाज़ियाबाद यू. पी.	976 000 7838	28 अक्टूबर, 1940

26	**डॉ. मेहता नगेन्द्र सिंह**	पटना	886 304 5716	22 जुलाई, 1940
27	**डॉ. विनोद प्रकाश गुप्ता 'शलभ'**	गुरुग्राम, हरियाणा	981 116 9069	17 अप्रैल 1949
28	**डॉ. शिव ओम अम्बर**	फर्रुखाबाद	941 533 3059	23 सितंबर, 1952
29	**डॉ. संगीता नाथ**	धनबाद, झारखण्ड	943 116 8918	03 फ़रवरी, 1963
30	**डॉ. सीमा विजयवर्गीय**	अलवर, राजस्थान	707 371 3013	03 नवंबर, 1972
31	**डॉ. (प्रो.) सुधा सिन्हा**	बुद्धा कालोनी, पटना	834 078 5305	16 फरवरी
32	**डॉ. सुनीता सिंह 'सुधा'**	हिसार, हरियाणा	967 161 9238	9 फ़रवरी, 1978
33	**दिनेश सिंदल**	जोधपुर	774 294 4505	11 मई 1956
34	**दिलीप समदर्शी**	बथनाहा, अररिया	870 902 2692	05 फ़रवरी, 1970
35	**नवीन सी चतुर्वेदी**	कांदिविली पूर्वी, मुंबई	996 702 4593	1 जनवरी 1969
36	**निरुपमा चतुर्वेदी**	जयपुर	998 391 2042	11 जनवरी, 1970
37	**पंकज त्यागी 'असीम'**	रुड़की	823 765 5835	21 फ़रवरी, 1977
38	**प्यास 'अंजुम'**	जम्मू	941 910 1315	29 सितंबर, 1949

39	**पूर्णिमा सुमन**	सुदामडीह, धनबाद	793 903 7709	28मई
40	**प्रीति सुमन**	सीतामढ़ी, बिहार	898 733 2733	4 नवम्बर
41	**बाबा बैद्यनाथ झा**	पूर्णियाँ, बिहार	754 387 4127	03 अगस्त, 1955
42	**भूपेन्द्र सिंह 'होश'**	लखनऊ	735 571 6884	6 अक्टूबर 1946
43	**महेश कुमार कुलदीप**	बाड़मेर, राजस्थान	907 993 7636	9 जनवरी, 1980
44	**मिथिलेश आदित्य**	अररिया, बिहार	997 353 6489	25 दिसम्बर, 1975
45	**मीना भट्ट सिद्धार्थ**	जबलपुर, मध्य प्रदेश	797 416 0268	30 अप्रैल, 1953
46	**मुकेश सिंहानिया**	छतीसगढ़	982 612 6384	26 जनवरी, 1974
47	**रमा प्रवीर वर्मा**	नागपुर, महाराष्ट्र	966 541 2860	2अक्टूबर, 1975
48	**रमेश 'कँवल'**	पटना, बिहार	878 976 1287	25 अगस्त, 1953
49	**रवि खण्डेलवाल**	इन्दौर, मध्य प्रदेश	769 790 0225	16 जनवरी, 1973
50	**राजकान्ता राज**	शिवपुरी, पटना, बिहार	930 824 5361	15 जनवरी
51	**रेखा भारती मिश्रा**	क़दमकुआँ, पटना	930 816 2129	25 फ़रवरी, 1984

52	**रीना धीमान 'स्वर्ण'**	सीवुड्स, नवी मुंबई	966 335 5575	01अगस्त, 1977
53	**संजीव प्रभाकर**	गाँधीनगर, गुजरात	908 213 6889	3 फ़रवरी, 1980
54	**सत्यभामा सिंह 'ज़िया'**	थाने मुंबई महाराष्ट्र	800 713 0204	1 जुलाई, 1960
55	**सुभाष मित्तल सत्यम्**	अहमदाबाद, गुजरात	979 940 3003.	4 सितंबर, 1948
56	**सुरेंद्र कुमार सैनी**	रुड़की, उत्तराखंड	790 619 1781	2 नवंबर, 1950
57	**हिमकर श्याम**	रांची झारखंड	860 317 1710	16 जनवरी, 1973

मुहब्बतों का शायर : रमेश 'कँवल'

नाम	: रमेश प्रसाद, बि.प्र.से. (से.नि.)
जन्म तिथि	: 25 अगस्त, 1953
धर्मपत्नी	: श्रीमती मंजू प्रसाद (परिणय 22 जून 1978)
अदबी ख़िदमात	: 'कँवल' शाहाबादी नाम से पहली ग़ज़ल परवाज़, लुधियाना से अगस्त 1972 में प्रकाशित हुई।
प्रकाशित ग़ज़ल संग्रह	: • लम्स का सूरज (उर्दू), सावन का कँवल (हिंदी) 1997 में • शोहरत की धूप (हिंदी) 2013 में, रंग-ए–हुनर (उर्दू) 2016 में •स्पर्श की चांदनी : काव्य संग्रह (ग़ज़ल नज़्म) 2019 में •इतराती बलखाती ग़ज़लें : ग़ज़ल संग्रह 2024 • अमृत काल की आधुनिक ग़ज़लें : ग़ज़ल संग्रह 2024; सम्पादन 2020 में • अक़ीदत के फूल : (ग़ज़ल नज़्म) 2020; संपादन 2021 • 2020 की नुमाइंदा ग़ज़लें : 600 ग़ज़लों का संकलन; संपादन-2022 • 21 वीं सदी के 21 वें साल की बेहतरीन ग़ज़लें • एक रुक्नी अनूठी ग़ज़लें; सम्पादन 2023 • अमृत महोत्सव की ग़ज़लें 75 रदीफ़ों पर ग़ज़लें • क्या सुनाएँ हाले-दिल-हफ़ीज़ बनारसी हफ़ीज़ बनारसी की ग़ज़लों का संग्रह • आज फूलों में ताज़गी कम है-हफ़ीज़ बनारसी की ग़ज़लों का संग्रह • वंदन! शुभ अभिवंदन! देव स्तुति की कविताओं का संग्रह; सम्पादन : 2024 • 24 बह्रों में 2024 की दिलकश ग़ज़लें • शुक्रिया! शायरी : कुमार अभिषेक द्वारा रमेश कँवल से संबंधित पुस्तक 2026

• ख़ुशनुमा लफ़्ज़ों का मौसम: कुमार अभिषेक द्वारा रमेश कँवल से संबंधित पुस्तक 2026

अन्य पुस्तकों में शामिल ग़ज़लें :

- रंगारंग शायरी (संपादक–प्रकाश पंडित),
- ग़ज़ल इंटर नेशनल (संपादक मंसूर उस्मानी)
- ग़ज़ल : दुष्यंत के बाद भाग 2 (संपादक दीक्षित दनकौरी)
- बिहार में जदीद ग़ज़ल (संपादक अताउल्लाह खां अल्वी)
- 101 किताबें ग़ज़लों की (संपादक नीरज गोस्वामी)
- संदल सुगंध भाग 4 (संकलित काव्य संग्रह) में पृष्ठ 33-38 पर ग़ज़लें
- हिंदी ग़ज़ल का बदलता मिज़ाज (संपादक अनिरुद्ध सिन्हा) पृष्ठ 92-98 पर ग़ज़लें
- 30 ग़ज़लगो 300 ग़ज़लें-डॉ. कृष्ण कुमार प्रजापति में ग़ज़लें शामिल
- ग़ज़ल त्रयोदश / उत्तरवाहिनी / अंडरलाइन इत्यादि ग़ज़ल विशेषांक में ग़ज़लें प्रकाशित
- कविताकोश www.kavitakosh.org पर 80 से ज़्यादा ग़ज़लें-गीत
- www.urduyouthforum.org पर 25 से ज्यादा ग़ज़लें
- www.rekhta.org पर 10 से ज्यादा ग़ज़लें
- 2 e-book 1 लम्स का सूरज (उर्दू), 2 रंग-ए–हुनर (उर्दू)

सम्प्रति : बिहार प्रशासनिक सेवा में संयुक्त सचिव स्तर के पद से सेवानिवृत (पटना में लगभग 3 साल तक ए डी एम लॉ एंड आर्डर रहे) के पश्चात सफ़ीर-ए-शहर-ए-शेर ओ अदब

सदर : बज़्म-ए-हफ़ीज़ बनारसी, पटना : मरकज़-ए-रंग-ए-हुनर

निवास : 6, मंगलम विहार कॉलोनी, आरा गार्डन रोड, जगदेव पथ-पटना-800014

मोबाइल : 878 976 1287

ई-मेल : rameshkanwal78@gmail.com

वेबसाइट : www.rameshkanwal.com